चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र
50

Photo by Brahmdev

पुरस्कृत परिचयोक्ति

कदम बढ़ाते चलो, जवान!

प्रेषक : अजीत कुमार रॉय - पटना

सुगन्धी दुनेवाले!
Remy
Remy
रेमी
पाउडर
और स्नो

चन्दामामा

अक्टूबर १९५९

विषय - सूची

जोड़ों का दर्द
छाती में कफ और जकड़न
कमर का दर्द

बिस्कुटों
जे. बी. मंघाराम के
एनर्जी
फूड
बिस्कुटों
देश की भावी पीढ़ी को स्वस्थ रखती है
जे.बी. मंघाराम अॅण्ड कं.
ग्वालियर
JBM

नहान

अब नये और बड़े साइज़ में

नहान

कीटाणु-नाशक साबुन
आपको साफ़ और स्वस्थ
रखता है।

यह टाटा उत्पादन है — अवश्य ही उम्दा है।

सूचना

एजेण्टों और ग्राहकों से निवेदन है कि मनीआर्डर कूपनों पर पैसे भेजने का उद्देश्य तथा आवश्यक अंकों की संख्या और भाषा संबंधी आदेश अवश्य दें। पता – डाकख़ाना, ज़िला, आदि साफ़ साफ़ लिखें। ऐसा करने से आप की प्रतियाँ मार्ग में खोने से बचेंगी।

—सर्क्युलेशन मैनेजर

★

ग्राहकों को एक जरूरी सूचना!

ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिये। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न होगा, उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकेगा। पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते की सूचना देनी चाहिए। यदि प्रति न मिले तो १० वीं तारीख से पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद में आनेवाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक, "चन्दामामा"

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

साधारणतया बच्चों की बन्दरों से तुलना की जाती है। यह तुलना कहाँ तक उचित है कहना कठिन है।

कहा जाता है कि बच्चे शरारती होते हैं और बन्दर भी। यह भी बताना कठिन है कि यह धारणा कहाँ तक गलत है और कहाँ तक ठीक। पर प्रचलित अवश्य है।

हमारे पूर्वज और बन्दरों के पूर्वज, बताया जाता है, एक ही हैं। यह भी विवादास्पद है।

कुछ भी हो, बन्दरों में हमें बहुत दिलचस्पी है और बन्दरों को हम में। हम अब बन्दरों के बारे में यहाँ जानकारी दे रहे हैं ताकि आप स्वयं यह जान सकें कि ये तुलनायें और धारणायें ठीक हैं कि नहीं।

वर्ष: ११ अक्टूबर १९५९ अंक: २

अगले दिन सवेरे दुर्योधन ने सभा बुलाई। भीष्म से कहा—"महोदय! आपने पाण्डव सेना देखी है। आप उसे अकेले कितने समय में नाश कर सकेंगे? इसी तरह, मुझे यह जानने की उत्सुकता हो रही है, द्रोण, कृपा, अश्वत्थामा, कर्ण, अपने दिव्यास्त्रों की सहायता से पाण्डव सेना को कितने समय में जीत सकेंगे।"

तब भीष्म ने कहा—"राजा, यह उचित ही है कि तुम अपने पक्ष का बल जानो। मैं अपनी शक्ति के बारे में बताता हूँ। सुनो। मैं एक दिन में दस हजार योद्धाओं और हजार रथिकों को मार सकता हूँ। मेरे पास ऐसे दिव्यास्त्र हैं, जो लाखों आदमियों को एक साथ मार सकते हैं। उनका उपयोग करने से ही पाण्डव सेना का नाश करने के लिए मुझे एक महीना लगेगा।"

फिर दुर्योधन ने द्रोणाचार्य से ही यही पूछा। द्रोण ने मुस्कराकर कहा—"राजा, मैं बूढ़ा हूँ। मेरी शक्ति कम हो गई है। मैं भी भीष्म की तरह पाण्डव सेना एक महीने में नष्ट कर सकूँगा। मैं इससे अधिक नहीं कर सकता।"

इसके बाद कृपा ने कहा कि वह दो महीनों में यह काम कर सकेगा। जब कि अश्वत्थामा ने बताया कि पाण्डव सेना का वह दस दिन में संहार कर देगा। कर्ण ने कहा कि इस काम के लिए पाँच दिन ही उसके लिए काफी थे।

यह सुन भीष्म हँसा। उसने कहा—"जब तक तेरा कृष्ण और अर्जुन से सामना नहीं होता, तू इसी तरह शेखी बघारता

रहेगा। कहने में क्या जाता है। कहोगे कि इससे भी बड़े बड़े काम करोगे।"

इस सम्भाषण के समाचार दूतों द्वारा युधिष्ठिर के पास पहुँचे। उसने अपने भाइयों को बुलाकर उन्हें भीष्म, द्रोण, कृपा, अश्वत्थामा, कर्ण आदि की बातों के बारे में बताया। उसने अर्जुन से पूछा—"मैं जानना चाहता हूँ कि तुम कितने समय में कौरवों का निर्मूलन कर सकोगे! यह जानना आवश्यक है।"

अर्जुन ने एक बार कृष्ण की ओर देखकर कहा—"तुम प्रतिपक्षियों के बारे में चिन्ता न करो। हमारी सेना में महारथ और अतिरथ हैं। वे कौरव सेना का नाश कर देंगे। क्या मेरे पास पाशुपत अस्त्र नहीं हैं, जो महेश्वर ने विराट रूप में आकर मुझ से द्वन्द युद्ध करके मेरी शक्ति की प्रशंसा करके, मुझे दिया था! उसमें वह शक्ति है जो एक क्षण में तीनों लोकों का विनाश कर सकती है। यदि कृष्ण का साथ रहे, तो मैं इस महा शक्ति से तीन लोकों का नाश कर सकता हूँ। वैसा अस्त्र भीष्म आदि के पास नहीं है। परन्तु हमें ऐसे अस्त्रों का उपयोग नहीं करना चाहिये। हम न्यायपूर्वक युद्ध करके शत्रु को पराजित करेंगे। शिखंडी, युयुधान, धृष्टद्युम्न, भीम, नकुल, सहदेव, युधामन्यु उतमौज, शंख, घटोत्कच, सात्यकी, अभिमन्यु, तुम, विराट, द्रुपद, उपपाण्डव क्या हम सब मिलकर तीनों लोकों को नहीं जीत सकते हैं!"
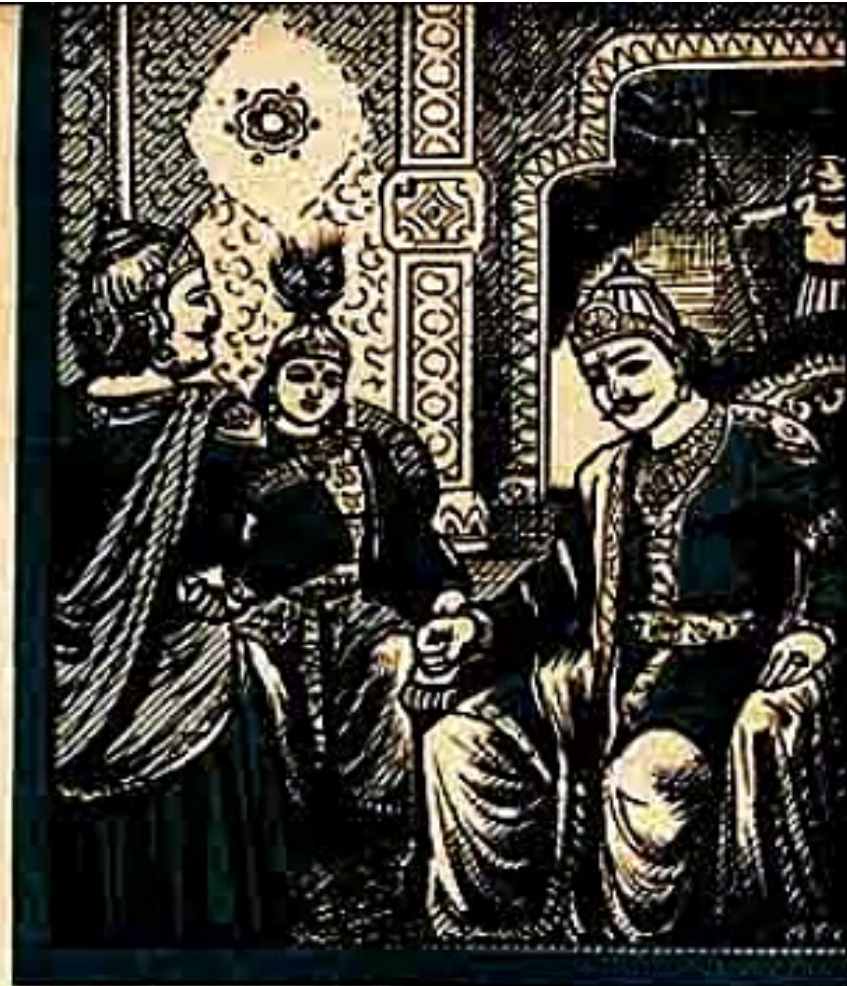
अगले दिन प्रातःकाल, पश्चिम से पाण्डवसेना पूर्व से कौरव सेना युद्ध भूमि में आई। क्यों कि उस समय जम्बूद्वीप के सब योद्धा कुरुक्षेत्र में थे इसलिए ऐसा लगता था जैसे सारा द्वीप योद्धाहीन हो गया हो।

दोनों पक्षों का उत्साह आसमान को छूता सा लगता था। आकाश में महायोद्धाओं की ध्वजायें फहरा रही थीं। उनकी शंख ध्वनियों से दसों दिशायें गूँज रही थीं। भूमि हिल्ती-सी लगती थी।

दोनों पक्षों ने कुछ युद्ध नियम निश्चित किये। युद्ध स्थल को छोड़कर भाग जानेवाले को न मारा जाय। रथ के सवार से रथ के सवार ही, हाथी पर सवार से हाथी पर सवार ही। अश्वारोही से अश्वारोही ही, पदाति से पदाति ही युद्ध करें। युद्ध न करनेवाले, बेहोश को न मारा जाय। युद्धविमुख और कवचहीन को न मारा जाय। रथिक की अनुपस्थिति में घोड़ों को, सारथी को, बाण देनेवाले को शंख बजानेवाले को न मारा जाय।

उस समय व्यास महामुनि ने धृतराष्ट्र के पास आकर कहा—"काल महिमा के अनुसार सब योद्धा मर मिटने के लिए कुरु क्षेत्र में एकत्रित हैं। तुम्हारा उनके बारे में शोक करना निरर्थक है। युद्ध भूमि के समाचार, संजय अब तब आकर तुम्हें बताता रहेगा।"

संजय अठारह दिन, जबतक महाभारत युद्ध चलता रहा, युद्ध के समाचार धृतराष्ट्र को बताता रहा।

इधर युद्धभूमि में, कौरव सर्व सेनानी, भीष्म सफेद कवच और सफेद पगड़ी पहिने हुए था। उसके रथ पर ताड़ के वृक्ष से अंकित पताका फहरा रही थी।

अपने पक्ष के वीरों को बुलाकर उसने उनको सम्बोधित करके कहा—"क्षत्रिय वीरो! तुम्हारे लिए स्वर्ग के द्वार खुले हुये हैं। उन द्वारों से तुम इन्द्रलोक और ब्रह्मलोक जा सकोगे। हमारे लिए वेदोक्त अनादि मार्ग यही है। इसलिए तुम भय छोड़ दो। मान्धाता, मायाति, नहुष, आदि द्वारा प्रशस्त मार्ग पर धैर्य के साथ चलो। रोगियों की तरह घर में मरना क्षत्रियों का लक्षण नहीं है।"

कौरव सेना एक व्यूह में व्यवस्थित की गई। उसमें भिन्न भिन्न योद्धा अपने अपने निश्चित स्थल पर खड़े थे। यह ग्यारह अक्षौहिणी सेना थी।

उधर अर्जुन अपनी सात अक्षौहिणी सेना को वज्र नाम के व्यूह में खड़ा कर रहा था। यह दुर्जय व्यूह है।

इस व्यूह के सामने भीम को खड़ा किया। नकुल और सहदेव, भीम के चक्र रक्षक बनाये गये। भीम के पृष्ट भाग की रक्षा के लिए उपपाण्डव और अभिमन्यु आदि नियुक्त हुए। इन सब की रक्षा सर्व सेनानी धृष्टद्युम्न कर रहा था।

दोनों सेनायें आगे बढ़कर एक दूसरे के पास आमने-सामने आईं। उस समय सूर्योदय हुआ।

महासमुद्र की तरह आती कौरव सेना, और उसके नायक भीष्म को देखकर युधिष्ठिर घबरा गया। उसने अर्जुन को पास बुलाकर कहा—"देखा, शत्रु सेना ने किस तरह का दुर्भेद्य व्यूह बना रखा है। यही नहीं उन्हीं की तरफ भीष्म भी है। क्या हम इस सेना को कभी जीत सकेंगे? क्या हमारी विजय होगी?"

"राज्य जीतने के लिए बल और वीरता प्रधान नहीं है। धर्म प्रधान है। हमारी तरफ धर्म है। यही नहीं, कृष्ण भी हमारी तरफ है। विजय हमारी ही होगी।" अर्जुन ने युधिष्ठिर को ढाढ़स बंधाया।

कृष्ण ने अर्जुन के साथ युद्ध भूमि में प्रवेश करने से पहिले दुर्गा की उपासना

करने के लिए कहा। अर्जुन ने रथ से उतरकर, युद्ध भूमि की ओर मुड़कर, हाथ जोड़कर दुर्गा की आराधना की। फिर रथ पर चढ़कर उसने कहा—"कृष्ण, मुझे किन किन से युद्ध करना है, उनको एक बार दिखाओ। मेरे रथ को दोनों सेनाओं के बीच में ले जाकर खड़ा कर दो।" कृष्ण ने वैसा ही किया।

अर्जुन ने कौरव सेना देखी। जिधर देखो उधर उसको पिता, दादा, गुरु, मामा, भाई, पुत्र, पौत्र, मित्र, बन्धु-बान्धव ही दिखाई दिये। उसने काँपते हुए कहा—"कृष्ण! राज्य के लिए, भोग विलासों के लिए, क्या मुझे इन्हें मारना है? क्या इनको मारकर मैं स्वर्ग के आनन्द भोग सकूँगा? कौरव नीच हैं, इसलिए इन सब को मरवाने के लिए यहाँ लाये हैं। मैं इनको अपने हाथों मारने की अपेक्षा यह चाहूँगा कि मैं इनके हाथ मर जाऊँ। मैं युद्ध नहीं कर सकता। गाण्डीव न पकड़ पाऊँगा। युद्ध से क्या लाभ?" उसने कहा। उसकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी।

कृष्ण ने अर्जुन का अज्ञान हटाने के लिए कितने ही उपदेश दिये। तू हत्यारा
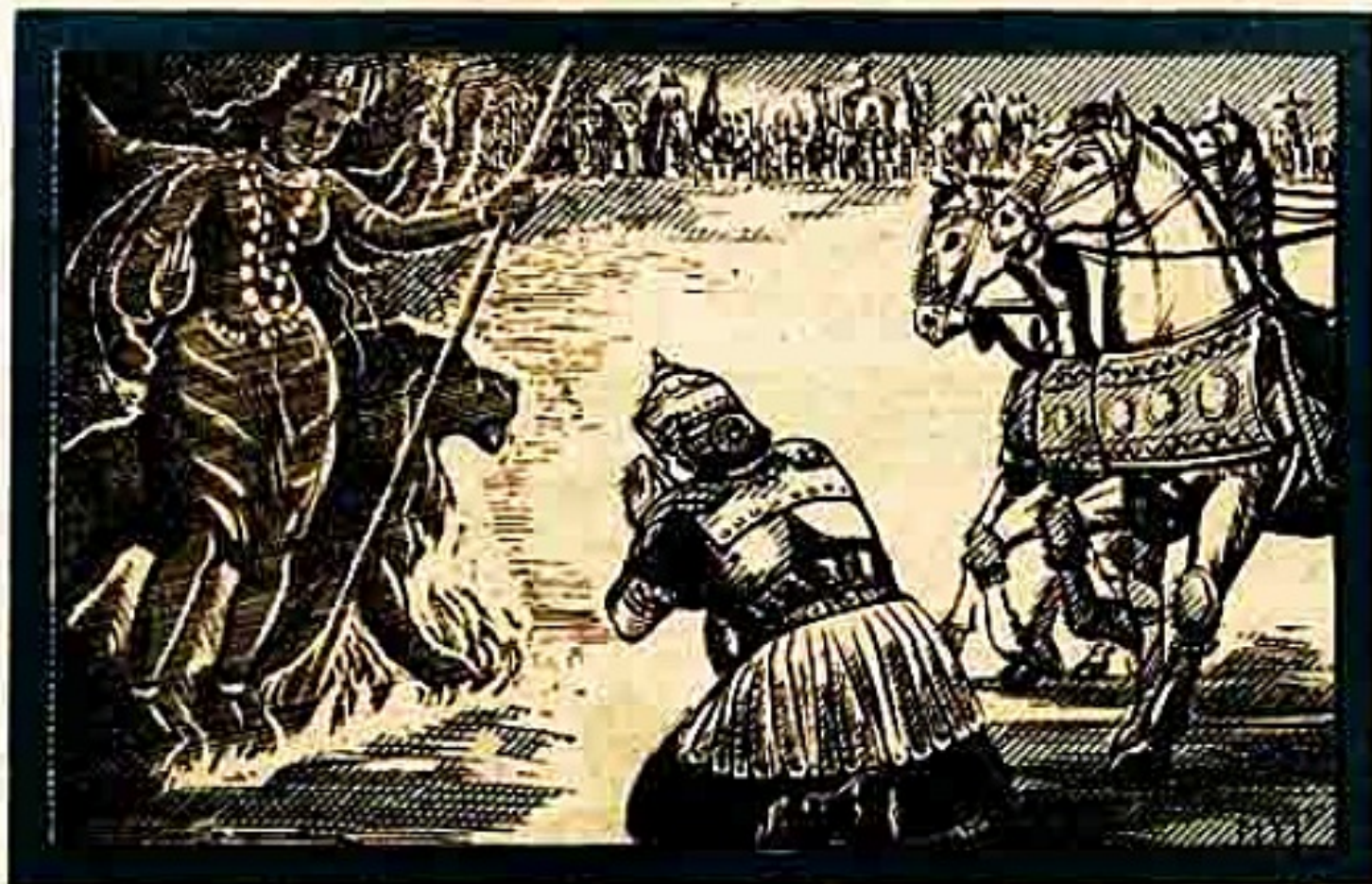
नहीं है, न ये मरते ही हैं। मनुष्य का शरीर नश्वर है, वे क्षण भंगुर हैं आत्मा अनश्वर है। यह भ्रम छोड़ दो कि तुम हत्यारे हो। तुम अपने धर्म का पालन करो। तुम्हें कार्य करने का ही अधिकार है, फल की अपेक्षा करने का अधिकार नहीं है।" तुम किसी प्रकार के सन्देह में न पड़ो।" कृष्ण ने आत्मा, कर्म, ज्ञान, योग, मोक्ष, आदि के बारे में अर्जुन को बताया। आखिर कृष्ण को अपना विश्वरूप भी अर्जुन को दिखाना पड़ा।

कृष्ण के हितोपदेश के कारण अर्जुन के भय, भ्रम और सन्देह चले गये। "कृष्ण अब मेरा क्या कर्तव्य है, बताओ। जो तुम करने को कहोगे, वह मैं करूँगा।" अर्जुन ने कहा।

इतने में युधिष्ठिर अपना कवच उतारकर, हाथ के अस्त्र छोड़कर भीष्म को नमस्कार करके, रथ से उतरकर चुपचाप शत्रु सेना की ओर गया। यह देखते ही अर्जुन, भीम, नकुल सहदेव, कृष्ण, और कई राजा अपने रथों से उतरकर युधिष्ठिर के पीछे गये।

"कहाँ जा रहे हैं! क्यों जा रहे हैं! बिना कवच के शत्रु के बीच जाना खतरनाक है न!" भाइयों ने युधिष्ठिर से पूछा। परन्तु युधिष्ठिर बिना कोई जवाब दिये आगे बढ़ता गया।

कृष्ण इस प्रकार हँसा, जैसे वह युधिष्ठिर का उद्देश्य जान गया हो। "युधिष्ठिर, युद्ध के लिए, भीष्म, द्रोण, और कृपा, शल्य आदि की अनुमति लेने जा रहा है। इस तरह बड़ों की अनुमति पर युद्ध करना श्रेयस्कर है। यह वह जानता है।" कृष्ण ने कहा।

[१५]

[चन्द्रवर्मा को देखकर राज-सैनिकों ने सोचा कि वह कोई बड़ा मान्त्रिक था। बूढ़े के पास से चन्द्रवर्मा ने कांसे के किले के मार्ग का नक्शा ले लिया। फिर वह सैनिकों के साथ रुद्रपुर पहुँचा। पुरवासियों ने चन्द्रवर्मा को देखते ही, "महामान्त्रिक की जय!" जयजयकार करके उसका स्वागत किया। बाद में...]

चन्द्रवर्मा जब राजमहल के पास पहुँचा तो, मुख्य द्वार के पास राजा शिवसिंह, मन्त्री, प्रमुख राजकर्मचारी उसका स्वागत करने आये। चन्द्रवर्मा के घोड़े पर से उतरते ही राजा ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर बड़ी आत्मीयता से कहा—' चन्द्रवर्मा, इतनी छोटी उम्र में ही तुम इतने बड़े मन्त्रवेत्ता हो गये हो। तुम जैसे इस जमाने में नहीं हैं। हमारे राज्य में रहकर महा दुष्ट शंख को तुमने मारा, यह जान कर हमारी प्रजा बड़ी खुश हुई। हम भी बहुत खुश हुए।"

राजा शिवसिंह के यह कहते ही चन्द्रवर्मा को बड़ा अचरज हुआ। पर उसने अपना आश्चर्य प्रकट न किया। मुस्कराते हुये उसने कहा—"यह शंख बड़ा दुष्ट था। महा पापी। इसीलिए ही उसको यमपुरी भेजना पड़ा।

"वर्मा, उस मान्त्रिक को मारकर तुमने हमारे राज्य का बड़ा उपकार किया है। शंख के पहाड़ पर इस समय जो तुम्हारा मित्र, कालकेतु रह रहा है, उससे मैंने सब कुछ तुम्हारे बारे में मालूम कर लिया है। उसी की सलाह पर मैं तुमसे काँसे के किले तक जाने की प्रार्थना करने आया हूँ। इसीलिए ही मैंने अपने सैनिकों द्वारा तुम्हें यहाँ निमन्त्रित किया है। तुम्हारा स्वागत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है।"

"काँसे का किला? वह तो बायें हाथ का खेल है।" चन्द्रवर्मा मुस्कराया। इतने में मन्त्री ने राजा के कान में कुछ कहा। राजा ने तुरत चन्द्रवर्मा के कन्धे से हाथ हटा लिया। महल की ओर चलते हुये कहा—"चन्द्रवर्मा! तुम सफर के कारण थक गये होगे। खा पीकर आराम करो। फिर फ़ुरसत से बातचीत करेंगे।"

चन्द्रवर्मा के रहने के लिए राजमहल में ही प्रबन्ध किया गया। स्नान समाप्त होते ही उसको तरह तरह के पकवान परोसे गये। फिर चन्द्रवर्मा ने बड़े बड़े गद्दोंवाले पलंग पर सोना चाहा, पर उसे नींद न आई। शंख पर्वत पर रहनेवाले कपालिनी व कालकेतु से शिवसिंह ने मेरे बारे में सब कुछ मालूम कर लिया है। कालकेतु ने शिवसिंह से क्यों कहा कि मैं अकेला ही काँसे के किले तक जा सकता था। इसमें क्या रहस्य है?

जब उसने इस विषय पर कुछ देर सोचा, तो उसे मालूम हो गया कि क्यों कालकेतु ने यह कहा था। फिर राज्य पाने के लिए धन और सेना की जरूरत है। इस के लिए काँसे के किले में रखी धनराशि बहुत सहायक होगी, उसका शायद यह विचार रहा होगा।

चन्द्रवर्मा अभी यह सोच रहा था कि राजा के प्रधान मन्त्री ने आकर कहा कि राजा उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। चन्द्रवर्मा जब उसके पास गया, तो राजा और प्रधान मन्त्री ने आदर पूर्वक सामने का आसन दिया।

"चन्द्रवर्मा! मुझे कांसे के किले में रखे धन का लालच नहीं है। मैं यह तुझे पहिले ही बता देना चाहता हूँ।" राजा शिवसिंह ने मुस्कराते हुए साफ साफ कहा।

चन्द्रवर्मा ने कुछ न कहा। बस, सिर हिला दिया।

"फिर यह पूछा जा सकता है कि मैं कांसे के किले के बारे में क्यों यों पागल-सा हूँ। इसका उत्तर अजीब हो सकता है, पर बिल्कुल सच है। यह तो तुम जानते ही हो कि यह कांसे का किला समुद्र के किनारे है।" राजा ने कहा।

"हाँ, पश्चिमी समुद्र तट पर। पिछले हजार सालों से किसी आदमी ने उसे नहीं देखा है।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

यह सुनते ही मन्त्री को आश्चर्य हुआ। उसने राजा की ओर देखा। राजा ने सिर हिलाकर कहा—"हाँ, हो सकता है। कई का विश्वास है कि उस कांसे के किले की एक तरफ की दीवार समुद्र से सटी हुई है। ठीक है न!"

"यह मैने भी सुना है।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

"हमारे पूर्वजों का विश्वास था कि उस दीवार से सटे समुद्र में कांसे के घड़ों में कुछ सुन्दर प्राणियों को एक मान्त्रिक ने कैद कर रखा है। मेरे पिता ने उनके लिए बहुत प्रयत्न किया। पर वे सफल न हो सके। तुम्हारे मित्र कालकेतु के, जो जब चाहे आदमी हो

सकता है, और जब चाहे कालसर्प हो सकता है, कहने से मुझे आशा होने लगी है कि तुम इन काँसे के कलशों को हमारे पास ला सकोगे।" राजा शिवसिंह ने कहा।

यह सुनते ही चन्द्रवर्मा ताड़ गया कि दाल में कुछ काला था। उन काँसे के कलशों के लिए, जिनमें कहा जाता था, सुन्दर प्राणी थे, कोई इतना प्रयत्न न करेगा। शिवसिंह तो काँसे के किले का धन ही चाहता था। वह स्वयं उसे पा न सका और इस भ्रम में कि मेरे पास मन्त्र शक्ति है, वह मेरी सहायता चाहता है। अगर सचमुच काँसे के किले में धन मिला, तो उसे शिवसिंह के हाथ न लगने दूँगा। धोखे का जवाब धोखे से दूँगा, और उसे मैं स्वयं ले लूँगा। मुझे इसने समझ क्या रखा है, चन्द्रवर्मा ने सोचा। उसे इसका भरोसा भी था।

"मुझ जैसे मान्त्रिक तो यही चाहते हैं कि ऐसे कठिन कष्ट साध्य कार्य कर दिखायें। मैं काँसे के किले तक जाऊँगा। मेरे साथ कुछ सेना भेजनी होगी। उनमें देव नाम के नौजवान का होना आवश्यक

है।" कहते हुए चन्द्रवर्मा ने अपनी हथेली को गौर से देखा।

राजा शिवसिंह और मन्त्री ने एक दूसरे को देखा। कुछ देर बाद राजा ने चन्द्रवर्मा से कहा—"उस देव का बूढ़ा पिता जंगलों में फिर रहा है। क्या तुम उससे मिले?"

"कौन बूढ़ा? ओहो...." कहते हुए चन्द्रवर्मा ने अपनी हथेली पर और गौर से देखा। वह जंगल में एक झोंपड़े में रहता है। उसे सब सुविधायें दीजिये। अगर वह शहर में आकर रहना चाहे, तो उसके लिए सब व्यवस्था कीजिये। देखिये उसे कोई कष्ट न हो। मेरा काँसे के किले तक पहुँचना उस बूढ़े और उसके लड़के देव पर बहुत कुछ निर्भर है।

चन्द्रवर्मा के यह कहने पर न राजा ने न मन्त्री ने ही कोई विरोध किया—"अच्छा! जैसे तुम कहोगे, वैसे ही मैं करूँगा। देव को तुम साथ ले जा सकते हो। क्या तुम्हारे लिए हज़ार आदमी काफी हैं?" राजा ने पूछा।

यह सुन चन्द्रवर्मा जोर से हँसा। "मैं युद्ध के लिए कहीं नहीं जा रहा हूँ। अगर

भेजूँगा। उनके साथ पचास सैनिक होंगे। हमारा राज्य पार करके जब तुम पश्चिम की घाटियों में प्रवेश करोगे, तब उस प्रान्त का राज्यपाल, वीरमल, अगर तुम कुछ चाहोगे तो वह सब करेगा।" राजा ने रौब से कहा।

वीरमल का नाम लेते ही चन्द्रवर्मा को अपना सेनापति धीरमल याद आया। वह और विश्वासपात्र सुबाहु न मालम कहाँ होंगे? उनको याद करके चन्द्रवर्मा ने लम्बा साँस छोड़ा।

"महाराज! जैसा आप उचित समझें वैसा कीजिये। मैं कल सवेरे निकल पड़ूँगा। काँसे के किले तक पहुँचने के लिए मुझे जंगल, पहाड़ और रेगिस्तान पार करने होंगे। रसद ढोनेवाले जन्तुओं को मुझे प्रदेश के अनुसार बदलना होगा। रेगिस्तान में यात्रा करते समय हमें ऊँटों की भी आवश्यकता हो सकती है। ये सब प्रबन्ध आपकी आज्ञा पर वीरमल ही करें।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

"यह सब मैं देख लूँगा। तुम्हें चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं।" राजा शिवसिंह ने कहा।

कभी युद्ध करना पड़ गया तो....वह अदृश्य रहकर, मेरे रास्ते में रोड़े अटकानेवाले दुष्ट शक्तियों से करना होगा। उसके लिए, मेरी मन्त्र-शक्ति के अतिरिक्त कुछ काम न आयेगा। आपके सैनिक तो कुछ भी न कर पायेंगे। मुझे चाहिये रसद ढोने के लिए कुछ गधे और उनको हाँकने के लिए कुछ आदमी। मेरे साथ दस आदमी हों, यही काफी है। यह जरूरी नहीं है कि वे सैनिक ही हों।"

"यह नहीं। अपने कर्मचारियों में, पाँच दस विश्वासपात्र बहादुर तुम्हारे साथ

अगले दिन सवेरे चन्द्रवर्मा काँसे के किले की ओर निकल पड़ा। शिवपुर की सीमा तक राजा, मन्त्री और प्रजा उसे छोड़ने आये। उसके साथ मुख्य अनुचर के रूप में देव था। उसे पिछले दिन रात को ही जेल से छोड़ा गया था।

जंगलों में चन्द्रवर्मा आदि कुछ योजन दूर गये। बूढ़े का दिया हुआ नक्शा मार्ग पता लगाने के लिए विशेष उपयोगी न था। सिवाय घने जंगलों और ऊँचे पहाड़ों के चन्द्रवर्मा को कहीं कोई आदमी दिखाई नहीं दिया। वह पश्चिम की ओर जा रहा था कि नहीं, रास्ते पर था कि नहीं, इसके लिए दो ही चिन्ह थे, वे थे सूर्योदय और सूर्यास्त।

इस प्रकार कुछ दिन यात्रा करने के बाद, एक दिन सूर्योदय के समय देव एक ऊँचे पत्थर पर से जोर से ताली बजाते हुए चिल्लाया—"यह देखो, हम किसी नगर के खंडहर के पास पहुँच गये हैं। यही शायद काँसे का किला हो।"

उसके इस तरह शोर करते ही चन्द्रवर्मा और उसके साथवाले राजकर्मचारी भागे-भागे देव के पास गये। और उस तरफ नजर दौड़ाई, जिस तरफ उसने इशारा किया था। सामने, पहाड़ के नीचे एक महानगर के खंडहर उन्हें दिखाई दिये। गिरी हुई दीवारें, एक तरफ झुकी छतें, जो गिरती-सी लगती थीं। दीवारों के बीच में पेड़-पौधे, उस प्रदेश को देखकर भय पैदा होता था।

"यह काँसे का किला नहीं है। फिर भी खंडहरों का देखना हमारे लिए आवश्यक है। मेरे साथ आओ।" चन्द्रवर्मा यह कहकर चट्टान से उतरकर खंडहर की ओर चल पड़ा।

जब सब मिलकर वहाँ गये, तो एक गिरे हुए मकान के सामने उन्हें शेर के तीन बच्चे दिखाई दिये। वे चन्द्रवर्मा और उसके साथियों को देखकर गुर्राते हुए पत्थरों के पीछे भाग गये। फिर उन्हें शेर का गरजना सुनाई दिया।

यह गर्जन सुनते ही चन्द्रवर्मा ने कहा—"हमारा इस मकान के पास जाना श्रेयस्कर नहीं है, हम किसी और तरफ चलें।" उसने यह कहकर रास्ता दिखाया।

खंडहर पाँच-छ: मील के दायरे में थे, पर उनको कहीं भी कोई आदमी नहीं दिखाई दिया। वहाँ हर मकान खंडहर था। कई तो ऐसे लगते थे, जैसे जल जला गये हों। उन मकानों में, जहाँ कभी मनुष्य रहे होंगे, अब चीते, जंगली सुअर, जंगली पशु रह रहे थे।

चन्द्रवर्मा जब नगर के बीच में पहुँचा, तो उसे एक ऊंची शिला दिखाई दी। उस पर कुछ अक्षर खुदे हुए थे, जो मिट मिटा गये थे। चन्द्रवर्मा ने शिला के पास जाकर, एक एक अक्षर जोड़कर उसे पढ़ा। उसमें यह लिखा था।

"यह करवीरपुर है। यह हजार वर्ष तक सम्पन्न रहा। इस नगर के उत्तर से, बर्बर नाम की जातिवाले आये और उन्होंने इसको लूटा। इसकी श्री सम्पदा को ले जाकर काँसे के किले में उन्होंने रखा।"

चन्द्रवर्मा ने यह पढ़कर अपने साथियों से कहा—"अब हमारे लिए समय व्यर्थ करना अच्छा नहीं। यहाँ सिवाय पत्थरों के कुछ नहीं है। यह काँसे का किला नहीं है। चलो, यहाँ से चलो।" सब फिर पश्चिम दिशा की ओर चलने लगे। (अभी है)

योगीश्वर जम्बूक

विक्रमार्क फिर एक बार पेड़ के पास गया। शव उतारकर कन्धे पर डाल चुप चाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा। "राजा, क्या तुमने सोचा, जो तुम कर रहे हो, वह ठीक है कि नहीं! क्यों कि कई जम्बूक की तरह सदुद्देश्य से बुरे काम भी करते हैं। तुम्हें चलते चलते थकान न हो इसलिये एक कहानी सुनाता हूँ। सुनो" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

किसी जमाने में हिरण्य पर्वत पर योगियों का एक आश्रम था। उसमें, लगभग हजार योगी कुटियायें बना कर रहा करते थे। कुछ समय तक राजा इस आश्रम का निर्वहण करता रहा, फिर देश में अराजकता फैली और आश्रम का

बेताल कथाएँ

पोषण न हो सका। आश्रम के पशु कमजोर हो गये। आश्रमवासियों को चीथड़े पहिनने पड़े। योगियों के गुरु ने कई तरह से सहायता पाने का प्रयत्न किया पर किसी ने आश्रम की सहायता न की।

उस आश्रम की गौवों की देख भाल करनेवाला जम्बूक नाम का एक व्यक्ति था। छुटपन में ही उसके माँ बाप मर गये थे। कुछ समय तक उसकी दादी ने उसको पाला पोसा, फिर वह भी मर गई। उसके बाद वह बिल्कुल अनाथ हो गया। मारा-मारा वह इधर उधर फिरा करता। योगियों के गुरु ने उसे देखा। और उसे आश्रम में लाकर गौवों को देखने की जिम्मेवारी उसको दी। तब से जम्बूक आश्रम में ही रहने लगा। पशुओं की देख भाल करता, भगवान की प्रार्थना करता समय काटने लगा।

आश्रमवासी जिन आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे थे उन्हे जम्बूक भी देखता आया था। उसे एक दिन एक उपाय सूझा। उसने गुरु के पास जाकर कहा—"गुरु जी, आर्थिक कठिनाइयों

दूर करने के लिए एक काम मुझे सूझ रहा है।

"क्या है वह!" गुरु ने पूछा।

"मेरी दादी एक चीज पकाकर बनाया करती थी। उसे अमृत सार कहा करते थे। बहुत-से धनी उससे वह अमृतसार बनवाया करते थे। मैं भी इस काम में उसकी मदद किया करता। हम दोनों शहर के बाहर जाकर तरह तरह की बूटियाँ बटोरकर लाते। वे सारी बूटियाँ जिस पहाड़ पर हमारी गौवें चरने जाती हैं, वहाँ हैं। मैं उन्हें रोज देखता रहता हूँ। अब मेरा यह विचार है कि यदि हम उन बूटियों को इकट्ठा करके, अमृतसार बनाकर बेचेंगे तो हमें किसी की सहायता की अवश्यकता न रहेगी।" जम्बूक ने गुरु से कहा।

"क्या तुम्हें अब भी याद है कि कैसे अमृतसार बनाया जाता है!" गुरु ने पूछा। जम्बूक ने कहा कि उसको अच्छी तरह याद था। तुरत बड़े बड़े योगियों की सभा हुई और उन्होंने आश्रम में अमृतसार बनाने का निश्चय किया।
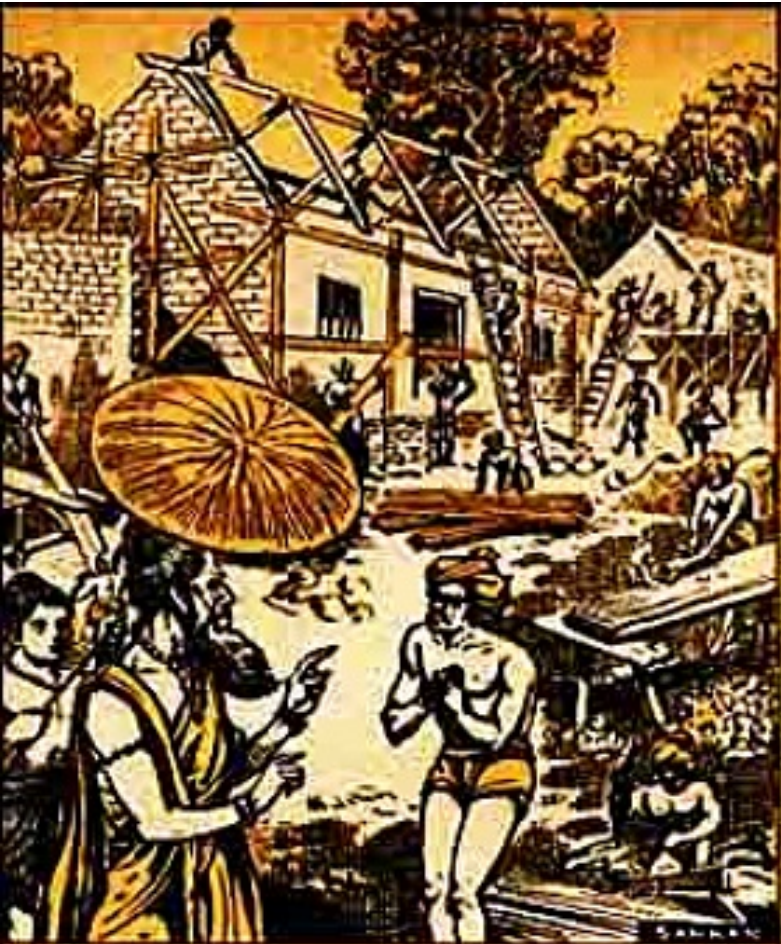
पशुओं की देखभाल का काम किसी और को सौंप कर, जम्बूक अमृतसार बनाने के काम में लग गया। इस काम के लिए आश्रम से कुछ दूरी पर एक कुटिया बनाई गई। उस में सिवाय जम्बूक के कोई नहीं जा सकता था। वहाँ उसने भट्टी बनायी। जरूरी बूटियाँ वह स्वयं इकट्ठा करने लगा। जल्दी ही कढ़ाई में अमृतसार तैयार हो गया। उसका स्वाद चखकर जम्बूक ने गुरु के पास जाकर कहा—"गुरु जी अमृतसार तैयार हो गया है। अच्छा बना है।"

बड़े योगियों ने मिलकर हिसाब लगाया। उन्होंने निर्णय किया कि उसका मूल्य उसके बनाने के कीमत से दस गुना हो। अमृतसार को चार बोतलों में रखकर चार अमीरों के पास उन्होंने भेजा। उन अमीरों ने उस तरह के पेय का स्वाद कभी न चखा था।

अमृतसार जल्दी ही घर घर में मशहूर हो गया। वह अमृतसार, जो दिन में दस बोतल बिकता था, अब सौ बोतलों में बिकने लगा। ये सौ देखते देखते पाँच सौ हो गईं। आखिर ऐसा भी समय आया जब कि हजार बोतलों के बिकने पर भी माँग बनी रहती। राजा से लेकर मध्यम श्रेणी के लोगों के घरों में दो दो तीन तीन, अमृतसार की बोतलें रखी जाने लगीं।

हर त्यौहार, उत्सव, विवाह आदि, शुभ कार्यों पर अमृतसार अधिक खर्च होता।

आश्रम पर सोने की बर्षा सी होने लगी। वहाँ कुटियायें तोड़ दी गईं और उनकी जगह बड़े बड़े मकान बनाये गये। अब आश्रम में दो हजार गायें थीं। सब के पास पहिनने के लिए कपड़ा था। और पेट भर खाना था।

अमृतसार बनाने के लिए अब एक बड़ा मकान तैयार किया गया। बूटियाँ इकट्ठी करने के लिए तीस आदमियों को वेतन पर रखा गया। परन्तु भट्टी के पास का काम जम्बूक को ही करना पड़ता। कितना किस चीज़ को पकाना चाहिये था, यह वह ही जानता था। यद्यपि वह रोज भट्टी के पास ही रहता था तो भी बड़े योगियों ने उसको अपने समान बना दिया।

एक दिन प्रार्थना के समय प्रार्थना स्थल पर जम्बूक झूमता आया "ऐ तुम सब क्या कर रहे हो!" वह जोर से चिल्लाया।

"लगता है, हमारे जम्बूक योगी को कोई हवा लग गई है। उसे ले जाओ।" गुरु ने कहा। अगले दिन सवेरे जम्बूक गुरु के पास गया, उसके पैरों पर पड़कर उसने कहा—"गुरु जी, मुझे क्षमा कीजिये। यह अमृतसार बहुत खराब है। उसी के असर में मैंने कल असभ्यों का-सा व्यवहार किया था। आप लोगों की संगति में, आप की सहायता से आत्म निरीक्षण में समय बिताने के बदले मैं रोज उस खराब पेय को तैयार करके नरक के मार्ग पर चल रहा हूँ। मुझे मेरी गायें दे दीजिये।"

गुरु ने बड़े बड़े योगियों को बुलाकर उनको जम्बूक की बातें बताईं।

"हे जम्बूक योगीश्वर! इस अमृतसार को सिवाय तेरे और कोई नहीं तैयार कर सकता है। गौवों को तो और भी देख सकते हैं। अब तुमने अमृतसार बनाना छोड़ दिया तो हमें कितनी ही कठिनाइयाँ उठानी पड़ेंगी। तुम जरा उन दिक्कतों को

तो याद करो जिन्हें हमें झेलना पड़ा था।" बड़े योगियों ने कहा।

गुरु ने जम्बूक की ओर मुड़कर पूछा— "अगर तुम अमृतसार को बनाते भी हो तो उसको पीने की क्या जरूरत है?"

"गुरु जी, चीज़ें ठीक अनुपात में पड़ी हैं कि नहीं, यह तो देखा जा सकता है। पर वे ठीक पकी हैं कि नहीं, यह तो चख कर ही जाना जा सकता है। इसीलिये भट्टी से उतरने के बाद मुझे अमृतसार चखना होता है।" जम्बूक ने कहा।

"यही है, तो पाँच दस बूंद चखकर देखो। इतना तो कोई हानि नहीं करेगा।" गुरु ने कहा।

जम्बूक ने सिर हिलाकर ठीक कहा। योगियों ने सोचा कि एक बड़ी आफ़त टल गई थी।

थोड़ा समय और बीता। जब रात को प्रार्थना हो रही थी तो जम्बूक कुछ गन्दे गाने गुनगुनाता बीच बीच में जोर से हँसता आया। उसने खूब पी रखी थी। कुछ लोगों ने घर ले जाकर उसे सुलाया। तभी गुरु ने बड़े योगियों

को बुलाकर विचार विमर्श किया। "चाहे कुछ भी हो, आसमान गिरे या जमीन उड़े हमें यह अमृतसार बनाना ही होगा।" उन लोगों ने कहा।

अगले दिन सवेरे जम्बूक ने फिर गुरु के पैरों पर पड़कर कहा—"गुरुजी, आप ही को मुझे नरक से बचाना होगा। अब मैं कुछ भी हो मट्टी के पास नहीं जाऊँगा। इसके लिए मैं उत्तम लोकों को नहीं खो सकता।"

"अब क्या हो गया है भाई! कहा तो था, अमृतसार की दो तीन बूँदे ही चखना। वैसे ही कर रहे हो न!" गुरु ने इस तरह पूछा, जैसे कुछ जानता ही न हो।

"अब बीस बूँद चख लूँगा, तो क्या वह मुझे छोड़ेगा! उसकी गन्ध ही पतन के लिए पर्याप्त है! उसको देखना पाप है। इसलिए मुझे और कोई काम दिलवाइये।" जम्बूक ने कहा।

"पगले। डरो मत। हम जब प्रार्थना कर रहे हों, उस समय तुम चाहो जो कोई भी पाप करो, वह तुम्हें न लगेगा। मेरे पास ऐसी योग-शक्ति है, जो तुम्हें कुम्भीपात नरक से भी ऊँचे लोकों में ले जा सकेगी।

इसलिए तुम निश्चिन्त होकर अमृतसार की संगति में रहो।" गुरु ने कहा।

उसके बाद जम्बूक को पाप का भय ही न रहा। उसने सारा भार गुरु पर डाल दिया, और अमृतसार तैयार करने लगा। वह अन्धेरा होते होते खूब पी बैठता। परन्तु प्रार्थनास्थल पर न जाया करता। जहाँ नशा खूब चढ़ता, वहाँ जा गिरता। दूसरे उसको घर पहुँचाया करते।

कालक्रम से सब योगी समाधि करके नरक पहुँचे। योगियों का गुरु जब नरक जा रहा था, तो उसने स्वर्ग में झाँककर जो देखा तो, कल्पवृक्ष के नीचे उसे जम्बूक दिखाई दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"वे योगी, जो एक भी पाप न करते थे नरक क्यों गये, जब कि खूब पीनेवाला जम्बूक स्वर्ग गया? इसका क्या कारण है? अगर इस प्रश्न का जान बूझकर जवाब न दिया तो तेरा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा—"जम्बूक ने पिया तो सही, पर उसने आश्रम के नियमों का गुरु के आदेश का उलंघन करके कभी पाप न किया। उसका मन हमेशा उत्तम लोकों पर ही रहा। परन्तु बाकी योगियों के बारे में यह नहीं कहा जा सकता। उनका मन हमेशा धन पर ही रहता। उन्होंने उत्तम लोकों के बारे में कभी नहीं सोचा। इसीलिए वे नरक गये। जम्बूक ने कमजोरी की वजह से पिया था, पर वह सदा यह जानता था कि पीना खराब था। इसीलिए वह स्वर्ग गया।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

आदर्श प्रेमी

वेरोना नगर में दो बड़े परिवार थे। उन दोनों में बहुत ही झगड़ा था। उन परिवारों के लोग ही नहीं, उनके दूर के सम्बन्धी भी, यहाँ तक कि नौकर भी, जब मौका मिलता लड़ने के लिए तैयार हो जाते। कई बार तो, आम सड़कों पर खून खराबी होती। यह झगड़ा जाने कब से चला आ रहा था।

उन परिवारों में से एक परिवार में जूलियट नाम की लड़की थी। वह बहुत ही सुन्दर थी। वह अपने पिता की इकलौती थी, और एक बड़ी सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी थी। दूसरे परिवार में रोमियो था। उसने रोज़लीना नाम की कन्या से प्रेम किया। पर उसने उसका प्रेम ठुकरा दिया। वह खाना पीना छोड़कर दीवाना-सा हो गया।

जूलियट के पिता ने एक बड़ी दावत दी, उसमें सिवाय रोमियो के परिवार के वेरोनो नगरवासी सब सपरिवार निमन्त्रित थे। उस दिन मनोरंजन की भी व्यवस्था थी।

रोमियो के बोन्वोलियो नाम के एक मित्र ने उससे कहा—"वेरोना नगर में कई लड़कियाँ ऐसी हैं, जो रोज़लीना से कई गुना सुन्दर हैं। अगर आज हम वेष बदलकर दावत में गये तो उन सबको देख सकेंगे।"

और लड़कियों की बात अलग रोज़लीना को तो देख ही सकेंगे, यह सोचकर रोमियो जाने के लिए मान गया। सच कहा जाय तो उसे पतिपक्षियों के प्रति कोई द्वेष न था। वह बोन्वोलियो और मेर्कुषियो नाम के एक और मित्र को

विलियम शेक्सपियर

लेकर, आँखों पर पट्टी बाँधकर गया। दावत में नाचनेवाले ऐसी पट्टियाँ बाँधकर जाया करते थे।

जब नृत्य हो रहा था रोमियो ने पहिली पहिली बार जूलियट को देखा और उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया। वह उससे प्रेम करने लगा। नृत्य के समाप्त होने पर वह जूलियट के पास गया, उसका हाथ पकड़ कर उसने कहा कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। पर यह न बताया कि वह कौन था।

किन्तु रोमियो का रहस्य छुप न सका। जूलियट के एक बन्धु टेबाल्ट ने उसकी आवाज पहिचान ली। वह तलवार लेकर रोमियो की ओर लपका। परन्तु जूलियट के पिता ने उसको रोककर कहा—"जब इतने लोग उत्साह से मनोरंजन कर रहे हैं, तब रक्तपात करके उनका आनन्द भंग न करो।" परन्तु टेबाल्ट ने शपथ की "फिर कभी यह रोमियो दिखाई देगा तो उसकी जान निकाल दूँगा।"

आधी रात के समय दावत खतम हुई, और अतिथि घर जाने लगे। रोमियो भी बाहर आया, पर उसके प्राण जुलियट पर ही थे। उससे दूर होना उसके लिए

असम्भव हो रहा था। वह जूलियट के घर के पिछवाड़े में गया। वहाँ की चार दिवारी फाँदकर बाग में पहुँचा।

थोड़ी देर बाद जूलियट एक छज्जे में आकर खड़ी हुई। जिस प्रकार रोमियो, जूलियट के बारे में सोच रहा था, उसी तरह जूलियट भी रोमियो के बारे में सोच रही थी। "रोमियो! तुम मेरे शत्रु कुल में क्यों हुये! मेरे लिए ही कम से कम दूसरे आदमी क्यों नहीं हो गये!" उसको इसतरह अपने आप में बातें करता सुन रोमियो फूला न समाया।

उसके पास जाकर रोमियो ने बातें छेड़ीं। वह घबरा गई। "मगर तुमको हमारे लोगों ने देखा तो ये मार देंगे।" उसने कहा।

"मारने दो! उनकी तलवारों से अधिक तुम्हारी आँखों ने ही मेरी हानि की है!" रोमियो ने कहा।

वैसे ही एक दूसरे का प्रेम वे जान गये थे। इसलिये जूलियट ने भी अपना प्रेम छुपाने की कोशिश न की। "कल यदि तुमने नौकर द्वारा यह बता दिया कि हमारी शादी कहाँ और कब होगी, तो मैं तुम्हारी हो जाऊँगी।"

ने उन दोनों का विवाह कराना स्वीकार कर लिया।

जूलियट के पास खबर पहुँची। वह लोरेन्स के रहने की जगह आई। लोरेन्स ने विधिपूर्वक उन दोनों की शादी की। और उनको पति-पत्नी घोषित किया। जूलियट अपने पिता के घर गई। और प्रतीक्षा करने लगी कि कब रात होती है और कब रोमियो आकर बाग में मिलता है।

जिस दिन रोमियो और जूलियट की शादी हुई थी, उस दिन दुपहर को एक दुर्घटना हुई। रोमियो के जब दो मित्र गली में जा रहे थे तो, जूलियट के बन्धु टेबाल्ट ने उनके सामने आकर मेर्कूपियो से कहा—"तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम रोमियो से दोस्ती करते हो?"

मेर्कूपियो ने बात का बात से जवाब दिया....बात बात में लड़ाई होने को ही थी कि रोमियो उस तरफ आया।

तुरत टेबाल्ट ने रोमियो को बुरा भला कहा। क्योंकि रोमियो की जूलियट से उसी दिन शादी हुई थी। इसलिए उसने अपनी पत्नी के बन्धु से झगड़ा मोल लेना

सवेरा होते ही रोमियो एक पुरोहित के पास गया। उसका नाम लोरेन्स था। वह रोमियो को बहुत चाहता था। रोमियो और जूलियट के कुटुम्बों में, जो पुश्त दर पुश्त झगड़ा चला आ रहा था, उसे बिल्कुल पसन्द न था। वह दोनों पक्षों का कुशल-क्षेम चाहता था।

जब रोमियो ने आकर बताया कि वह चुपचाप जूलियट से शादी करना चाहता था, तो उसने सोचा कि कम से कम इस तरह ही दो पुराने परिवारों का झगड़ा खतम हो सकेगा। इसलिए लोरेन्स

न चाहा। उसने टेबाल्ट को मीठी मीठी बातें करके मनाने की कोशिश की। पर मेर्कूषियो को रोमियो की शादी के बारे में कुछ न मालूम था। उसने टेबाल्ट पर तल्वार उठाई। उन दोनों को रोमियो और बोन्वल्यियो ने छुड़ाना चाहा। पर वे लड़ते रहे। और लड़ाई में मेर्कूषियो को चोट लगी और वह मर गया।

मित्र की मृत्यु के कारण रोमियो को गुस्सा आ गया। उसने तल्वार निकाली। इसी बीच इस झगड़े के बारे में सारे शहर में खबर फैल गई। वहाँ वेरोना का राजा, रोमियो और जूल्यिट के माँ-बाप और कई सारे लोग जमा हो गये।

जूल्यिट के परिवार वालों ने राजा से रोमियो को कठिन दंड देने की प्रार्थना की। रोमियो के परिवार वालों ने कहा—"मेर्कूषियो को मारने का कारण—यूँ भी टेबाल्ट को मृत्यु की सजा मिलती। रोमियो ने क्योंकि उसे ही मारा था, इसलिए वह निर्दोषी था।"

राजा ने किसी की भी बात न सुनी। रोमियो को आज्ञा दी कि अगले दिन सवेरा होने से पहिले वह नगर छोड़कर चला

जाय। अगर वह न गया तो उसको मौत की सजा दी जायेगी।

राजा ने जब यह आज्ञा दी तब रोमियो लोरेन्स के पास था। यह सुनते ही उसने कहा—"जहाँ जूल्यिट न हो, वह जगह मेरे लिए नरक है। वेरोना छोड़कर कैसे जाऊँ?"

लोरेन्स ने उसे आश्वासन देते हुए कहा—"तुम अपने भाग्य पर खुश होओ। युद्ध में तुम्हें टेबाल्ट ने नहीं मारा। उसको मारने के कारण राजा ने तुम्हें मौत की सजा न दी। तेरा भाग्य अच्छा है।"

"आज मैं जूल्यिट के साथ रात बिताऊँगा। सवेरा होते ही मान्डया शहर चला जाऊँगा। मौका मिलने पर आप हमारे विवाह के बारे में बता दीजिये। यह जानकर हमारे परिवार पारस्परिक द्वेष छोड़कर शायद एक दूसरे के निकट आ जायें। तब सम्भव है राजा इस सजा को भी रद्द करें। तब मैं वापिस आकर जूल्यिट के साथ सुखपूर्वक गृहस्थी कर सकूँगा।" रोमियो ने कहा।

रोमिया के वेरोना नगर छोड़कर चले जाने के बाद जूल्यिट के पिता ने एक अच्छे सम्बन्ध के बारे में बात उठाई। वर अच्छे, बड़े खानदान का था। नौजवान था। हर तरह से जूलियट के लिए ठीक था। जूलियट का पिता न जानता था कि उसकी शादी पहिले ही हो चुकी थी।

पिता ने शादी के बारे में जब बताया तो जूलियट ने कहा कि अभी वह शादी के लायक न थी। उसने यह भी कहा कि टेबाल्ट की मृत्यु के बाद इतनी जल्दी विवाह की बात सोचना ठीक न था। कितनी ही आपत्तियाँ उठाईं। उसकी बातें सुनकर पिता को गुस्सा आ गया। गुस्से में उसने

कहा—"अगले बृहस्पतिवार को तेरी शादी है। तैयार हो जाओ।"

जूलियट को कुछ न सूझा कि क्या करे। वह लोरेन्स के पास सलाह के लिए गई। "अगर तुमने एक छोटा-सा काम किया तो तुम इस शादी की आफत से बच जाओगी। क्या तुममें वह काम करने की हिम्मत है?" लोरेन्स ने कहा

"अगर पति के लिए मरना भी हो तो मैं तैयार हूँ।" जूलियट ने कहा।

"तो तुम घर जाओ। शादी के लिए मान जाओ। खुशी से रहो। शादी से एक दिन पहिले मैं जो दवा दूँ उसे पी लेना। तुम उसके असर के कारण बयालीस घंटे मर-सी जाओगी, फिर उसके बाद इस तरह उठोगी, जैसे लम्बी नींद आई हो।" लोरेन्स ने कहा।

जूलियट ने साहस करके, लोरेन्स के कथानानुसार किया—पिता सन्तुष्ट हुआ कि वह उसके चुने हुये वर से शादी करने के लिए मान गई थी। बुधवार की रात को जूलियट ने लोरेन्स की दी हुई दवा पीली। शादी के दिन सवेरे जूलियट को देखकर उसके बन्धुओं ने सोचा कि वह

मर गई थी। विवाह के लिए जो जोश था, वह मातम में बदल गया। उस पुरोहित को जो शादी कराने आया था, अन्त्येष्टि संस्कार कराना पड़ा। उसको कब्रिस्तान ले जाकर उनके कुटुम्ब के समाधि गृह में रखकर वे चले गये।

लोरेन्स को जब पता लगा कि जूलियट ने उसकी दी हुई दवा पी ली थी तो रोमियो के पास उसने आदमी भेजा, और उसको सब कुछ बताया। परन्तु उस आदमी के पहुँचने के पहिले ही रोमियो को जूलियट की मृत्यु का समाचार मिला।

उसने तुरत एक हकीम को बहुत-सा धन दिया और उससे एक विष लेकर, वायु गति से वेरोना आया। सीधे समाधि के पास गया। उस समय वहाँ नया वर भी आया। दोनों में तलवारों से झगड़ा हुआ। नया वर मारा गया। दूर से यह सब एक नौकर देख रहा था। उसने जाकर इसकी खबर जूलियट के पिता को दी।

इस बीच, रोमियो ने अपनी पत्नी को देखा। समझा कि वह सचमुच मर गई थी। उसे यह न मालूम था कि थोड़ी देर में ही वह उठनेवाली थी। इसलिये वह विष निगल गया और उसकी बगल में मर गया।

थोड़ी देर बाद जूलियट उठी। उसने अपने पति का शव देखा। उसने एक कटार लेकर आत्महत्या कर ली। और इसतरह वह अपने पति से जा मिली।

जब तक सब भागे भागे आये तब तक सब खतम हो चुका था। उनके परस्पर विद्वेष और विरोध के कारण ही रोमियो और जूलियट की अकाल मृत्यु हुई थी। यह जानकर बड़े बुजुर्गों को अक्ल आई। इतनी सारी नर-बलियों के बाद उन दोनों परिवारों में मैत्री हुई।

ग्रीस देश में एक राजा था। उसके एक ही एक लड़की थी। वह ज्योतिषियों से पूछा करता कि उसके बाद राज्य करने के लिए उसके लड़का होगा कि नहीं। उन्होंने बताया कि लड़का न पैदा होगा। और उसकी लड़की का लड़का उसकी मौत का कारण होगा।

यह सुन राजा को डर लगा। उसने एक पत्थर का ऊँचा बुर्ज बनवाया। उसमें न खिड़की थी न दरवाजे ही। उस पर कोई चढ़ न सके, इसलिए उस पर काँसा मढ़वा दिया गया। राजकुमारी को उसमें रखा। एक छेद में से रोज उसे खाना पहुँचाया जाता। दिन रात पहरा रहता। राजकुमारी का संसार से कोई सम्बन्ध न था। परन्तु वहाँ आकाश, पक्षी, धूप और चान्दनी दिखाई देते थे। कुछ दिन बीत गये। राजकुमारी सयानी हुई। उसे एक रोज़ अजीब सपना आया। उसने बुर्ज से जो ऊपर देखा, तो उसे सोने का बादल दिखाई दिया। उस में से सोने की वर्षा उस पर पड़ी। उसके नौ महीने बाद उसके एक लड़का हुआ।

पहरा देने वालों को बुर्ज में किसी बच्चे का रोना सुनाई दिया। उन्होंने जाकर राजा से यह बात कही। उसने अपनी लड़की और पोते को बुर्ज में से निकलवाया। उन दोनों को जीते जी मार देने का उसे साहस नहीं हुआ। उसने एक लकड़ी का सन्दूक बनवाया। उन दोनों को उसमें रखा गया। उसे समुद्र में फेंक दिया गया। इसतरह वे दोनों मर जायेंगे और उस पर हत्या का दोष भी न लगेगा, उसका विचार था।

परन्तु, जैसा उसने सोचा था वैसा हुआ नहीं। वह सन्दूक एक दिन और एक रात समुद्र में तैरता रहा, फिर एक द्वीप के किनारे जा लगा। उस द्वीप के राजा का भाई मछियारा था। माँ, बेटे का यह सन्दूक उस मछियारे को मिला। उसे राजकुमारी की कहानी सुनकर दया आई। वह उसे और उसके लड़के को घर ले गया। लड़के का नाम उसने पेर्सियस रखा।

राजकुमारी के कष्ट अभी दूर न हुये थे। उसके बारे में जानकर उस द्वीप के राजा ने उससे विवाह करने का प्रयत्न किया। यह जानकर कि वह बहुत क्रूर था, राजकुमारी ने उससे शादी करने से इनकार कर दिया।

पेर्सियस बड़ा हुआ। एक दिन राजा ने अपने राज्य के नौजवानों को दावत दी। दावत के लिए जो जो गये वे राजा के लिए घोड़े, सोना, अच्छे अच्छे कवच, बाण आदि ले गये। पेर्सियस गरीब था। वह कुछ न ले जा सका। राजा ने उससे पूछा—"खाली हाथ क्यों आये? कम से कम एक घोड़ा तो लाते?" सब हँसे।

"घोड़ा? अच्छा होता 'भयंकर सिर' लाने के लिए अगर कहते? ला देता।"

"खैर, क्या हो गया? अब माँगता हूँ। "भयंकर सिर" लादो। उसको बिना लाये मेरे पास फिर न आना।" राजा ने कहा। फिर सब हँसे।

पेर्सियस का अपमान हुआ। उसने, गम्भीरता से कहा—"अच्छा, ला दूँगा।" फिर वह वहाँ से समुद्र के किनारे गया। एक जगह बैठा अपनी गरीबी पर सोचता रहा। और सोचता सोचता वहीं सो गया।

नींद में उसे लगा जैसे कोई कह रहा हो—"अगर तुम सचमुच भयंकर सिर

लाना चाहते हो, तो जो मैं कहता हूँ, उसे गौर से सुनो। तुम अगर पश्चिमी देवताओं के पास गये तो वे तुम्हें "भयंकर सिर" के पास जाने का मार्ग बतायेंगे। पश्चिमी देवताओं के पास पहुँचनेवाले रास्ते के बारे में बताने वाली तीन बुढ़ियायें हैं। वे उत्तर में रहती हैं।"

यह सुनते ही पेर्सियस उठ खड़ा हुआ। आस-पास तो कोई न था। पर सपने की बातें उसे अच्छी तरह याद थीं। अगर उसने उस सलाह पर काम किया तो उसे "भयंकर सिर" मिल सकेगा, यह आशा उसके मन में बुल्बुलाने लगी।

परन्तु इस "भयंकर सिर" का मतलब ही क्या है! कहीं तीन बहिनें रहती थीं। वे भयंकर राक्षसियाँ थीं। उनके सिर के बालों की जगह साँप थे। उनके लम्बे लम्बे फण और काँसे के हाथ थे। उन में भयंकर नाखून थे। उन में से एक का सिर "भयंकर सिर" के रूप में प्रसिद्ध था। इसका कारण यह था कि अगर कोई उस सिर को देखता, तो वहीं पत्थर का हो जाता। इस "भयंकर सिर" के बारे में हर कोई जानता था।

पेर्सियस ने यह सिर लाने का प्रण किया। घर आकर उसने अपनी माँ से यह बात न कहकर, कहा कि वह देश भ्रमण के लिए जा रहा था। वह उससे विदा लेकर चला गया।

वह उत्तर की ओर गया। और उस जगह गया, जहाँ तीन बुढ़ियायें रहती थीं। ये बुढ़ियायें भी बड़ी खराब थीं। अन्धी थीं। इन तीनों की कुल मिलाकर एक ही आँख थी। वह जिसके पास होती, वह ही देख पाती। जब वह आँख एक दूसरे को दे रही थी, पेर्सियस ने वह आँख ले ली।

"हमारी आँख किसी ने चुरा ली है। अब हम नहीं देख सकतीं।" बुढ़ियायें शोक करने लगीं।

"तुम्हारी आँख मेरे पास है। अगर तुमने पश्चिमी देवताओं के पास जाने का रास्ता बताया तो तुम्हें यह दे दूँगा। नहीं तो तुम अन्धी रहोगी।" पेर्सियस ने कहा।

और कोई चारा न था। उन्होंने पश्चिमी देवताओं के यहाँ जाने का रास्ता बताया। पेर्सियस ने आँख उनको दे दी। उनके बताये हुए रास्ते पर जाता जाता पश्चिमी देवताओं के पास पहुँचा।

पश्चिमी देवताओं ने उसका आदर-सत्कार किया। उसे यह भी बताया कि भयंकर सिर के कारण क्या क्या आपत्तियाँ आ सकती थीं। उनसे बचने के लिए उन्होंने आवश्यक साधन भी दिये। इन में जादू की चप्पल, जादू की तल्वार, जादू की टोपी और जादू की थैली भी थी।

"इन चप्पलों के पहिनने से, तुम चाहो जितनी तेजी से, चाहो जहाँ जा सकते हो। यह जादू की तल्वार एक ही चोट में किसी भी चीज़ को काट देती है। जादू की टोपी तुम्हें अदृश्य रखेगी। भयंकर

सिर को काटकर जादू के थैले में रखना। अगर तुमने सामने से उस राक्षसी को देखा तो तुम पत्थर हो जाओगे। इसलिए शीशे की तरह चमकनेवाले ढाल में उसे देखकर उसका सिर काट देना। अपना काम खतम करके हमारे साधन, एक थैले में अगर पहाड़ पर रख दिये, तो वे हमारे पास आ जायेंगे।" पश्चिमी देवताओं ने कहा।

पेर्सियस उनसे बिदा लेकर जादू की चप्पलों की महिमा के कारण तेजी से उन बर्फीले पहाड़ों की ओर चल पड़ा, जहाँ वे राक्षसियाँ रहा करती थीं। उसने जादू की टोपी पहिन रखी थी, ताकि वह अदृश्य रहे। और ढाल में पड़नेवाली परछाई को देखता तल्वार लिए तैयार था।

थोड़ी देर में वह तीन राक्षसियों की जगह पहुँचा। उस समय वे तीनों सो रही थीं। भयंकर सिरवाली राक्षसी बीच में सोई हुई थी। पेर्सियस ढाल में देखता, उसके पास गया, और एक ही चोट से उसका सिर काटकर थैले में रख लिया।

कुछ आहट हुई और बाकी दोनों राक्षसियाँ उठकर उसका पीछा करने लगीं। उसकी रक्षा जादू की चप्पलों ने नहीं की।

जितना तेज वे जा सकते थे, ये राक्षसियाँ भी भाग सकती थीं। परन्तु चूँकि उसके सिर पर जादू की टोपी थी, इसलिए वह अदृश्य था और राक्षसियाँ उसे देख न सकीं।

जैसे तैसे "भयंकर सिर" को लेकर जादू की चप्पल की मदद से जब तेजी से वह आकाश में उड़ा जा रहा था तो पेर्सियस को एक आश्चर्य दिखाई दिया। ठीक उसके नीचे समुद्र का किनारा था। उसके पीछे ऊँचे पहाड़ थे। एक नोकीले सिरे पर, जो समुद्र में चला गया था, उसे एक सफेद स्त्री का रूप दिखाई दिया।

उसे मूर्ति जान उसे देखने के लिए पेर्सियस नीचे उतरा, उसने देखा कि वहाँ एक युवती खड़ी थी। उसने आश्चर्य से पूछा—"यहाँ यों क्यों खड़ी हो? तुम्हें इन जँजीरों से जकड़ क्यों रखा है?"

"मैं इस देश की राजकुमारी हूँ। मेरी माँ को यह घमन्ड है कि वह बहुत सुन्दर है। एक बार उसने शेखी मारी कि वह समुद्र की देवियों से भी अधिक सुन्दर थी। यह सुन समुद्र की देवियो ने हमारे देश में समुद्री राक्षसी को भेजा। वह राक्षसी रोज एक एक आदमी को ले जाकर खाती है।" राजकुमारी ने कहा।

"डरो मत! मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।" कहकर, पेर्सियस समुद्री राक्षसी को मारने के लिए तैयार होने लगा। जल्दी ही समुद्र के ऊपर से राक्षसी आई। पेर्सियस ने जादू की टोपी पहिन ली। अदृश्य होकर उसने राक्षसी पर अपनी तलवार से कई प्रहार किये। राक्षसी घायल हो गई थी। फिर भी राजकुमारी की ओर आता देख थैले में से "भयंकर सिर" निकालकर उसे राक्षसी की ओर दिखा कर उसने स्वयं मुँह फेर लिया। तुरत वह राक्षसी पत्थर हो गई।

फिर पेर्सियस ने "भयंकर सिर" को थैले में रख दिया। राजकुमारी की जंजीरों को तोड़ दिया। "आओ! तुम्हारे माँ बाप के पास चलें।"

"नहीं, मुझे आप अपने साथ ले जाइये। आपकी दासी बनकर ही आपका ऋण चुकाऊँगी" राजकुमारी ने कहा।

"तो हमारे ग्रीस देश में आकर मुझसे शादी करो।" पेर्सियस ने कहा। वह इसके लिए मान गई!

पर पिता को यह मंजूर न था कि उसकी लड़की किसी ऐरे-गैरे से शादी करे। उसने अपने साले को उकसाया। "कुछ भी हो तुम इस सम्बन्ध को तोड़ दो और मेरी लड़की से तुम शादी कर लो।"

राजा का साला सेना के साथ आया। उसने पेर्सियस से कहा—"तुम राजकुमारी से शादी करने लायक नहीं हो। तुम उसे छोड़ दो, नहीं तो मुझसे युद्ध करो।"

"यह याद रखिये मैं वही हूँ जिसने समुद्र राक्षसी को मारा था। आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।" पेर्सियस

ने कहा। परन्तु राजा का साला न माना। पेर्सियस ने "भयंकर सिर" दिखाकर उन सबको पत्थर बना दिया। वह फिर अपनी पत्नी के साथ माता के पास गया।

उसके वापिस आने तक वहाँ बहुत-सी बातें हो गई थीं। राजा ने अपने भाई, मछियारे को कैद कर लिया था। और पेर्सियस की माता को अपने घर दासी बना रखा था। पेर्सियस ने उस राजा के पास जाकर कहा—"तुम मेरी माँ को तुरत छोड़ दो। तुम अपने अन्याय के लिए, उसे थोड़ा सोना भी दो।"

"अरे, तुम, फिर आ गये! कौन है वहाँ! इस दुष्ट को पकड़कर कैद में डाल दो।" राजा ने कहा।

"राजा, जरा ठहरो। मुझे तुमने एक चीज़ लाने के लिए भेजा था। वह ले आया हूँ, क्या देखकर खुश न होगे!" पेर्सियस ने पूछा।

"हाँ हाँ, "भयंकर सिर" लाने के लिए गये थे न! कहाँ है वह सिर!" राजा ने पूछा।

पेर्सियस ने थैले में से सिर निकालकर राजा के सामने रखा और स्वयं मुँह मोड़ लिया। राजा पत्थर हो गया। फिर उसने अपने संरक्षक पिता को जेल से छुड़ाया। और उसको उस देश का राजा बनाया।

तब पेर्सियस ने माँ के द्वारा अपने नाना के बारे में भी मालूम किया। वह पत्नी के साथ नाना को देखने माँ की जन्मभूमि गया। परन्तु नाना को यह बात पहिले ही मालूम हो गई और वह एक और देश भाग गया था।

पेर्सियस वहाँ भी गया। नाना से मिलकर उसने पूछा—"नाना, मुझे देखकर क्यों डरते हो! तुमने यद्यपि मेरी माँ, और

मेरे साथ अन्याय किया है, पर मुझे तुमसे कोई दुश्मनी नहीं है। आओ, घर चलें।"

वहाँ प्रतिद्वन्द्वितायें हुईं। इस प्रतिद्वन्द्विता में जब पेर्सियस चक्र फेंक रहा था, तो वह हाथ से छूट पड़ा, निशाने पर न लगकर नाना को लगा। उस चोट के कारण वह मर गया। ज्योतिषियों का कहना ठीक निकला।

इस घटना से पेर्सियस को बहुत दुःख हुआ। यद्यपि नाना का राज्य अब उसी का था, पर उसे किसी और को देकर उसके बदले उसने पास में एक और राज्य ले लिया। यहाँ पेर्सियस कुछ समय तक अपनी पत्नी के साथ सुख से रहा।

कुछ वर्ष बीत गये। इस बीच उसने "भयंकर सिर" को एक गुप्त जगह गाड़ दिया। पश्चिमी देवताओं की दी हुई चप्पल, तलवार, उनके थैले में रखकर, एक पहाड़ की चोटी पर रख आया, ताकि वे उन तक पहुँच सकें।

एक दिन पेर्सियस को समुद्र पर से अनेक नौकायें आती दिखाई दीं। उसे पता लगा कि उसके ससुर अपनी लड़की को ले जाने के लिए, जरूरत पड़ने पर

उससे युद्ध करने के लिए आ रहे थे। यह एक दूत ने आकर उसको बताया। पेर्सियस ने बहुत कहा पर दूत ने न सुनी।

"कम से कम ससुर जी से एक बार मुझ से और अपनी लड़की से बातचीत करने के लिए कहो। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उनको कैद न करेंगे, न उन पर किसी शस्त्र का ही उपयोग करेंगे।" पेर्सियस ने दूत से कहा।

उस दिन रात को उसने भयंकर सिर को गुप्त जगह से निकाला और समुद्र के किनारे एक पत्थर के पीछे पानी में डुबोकर रख दिया, अगले दिन सवेरे ससुर की प्रतीक्षा करता, वह उसी पत्थर पर आकर बैठा।

बूढ़ा राजा एक नाव में जहाँ वह बैठा था वहाँ आया—"मैं अपनी लड़की को लेने के लिए आया हूँ। चाहे तुम कुछ भी करो पर मेरा निश्चय न बदलेगा। पेर्सियस के ससुर ने कहा।

"इधर देखिये। आपका मन जरूर बदलेगा।" कहकर पेर्सियस ने भयंकर सिर को उनके सामने उठाया और अपना मुँख एक तरफ मोड़ लिया।

बूढ़ा राजा अन्धा था। यह पेर्सियस न जानता था।

उसने अपने दामाद से कहा—"मेरा मन इस तरह कभी न बदलेगा।"

यह सुनते ही पेर्सियस जान गया कि भयंकर सिर का प्रभाव बूढ़े पर नहीं हुआ था। यह सोचकर उसका असर ही खतम हो गया है उसने अपना मुँह, भयंकर सिर की ओर मोड़ा। तुरत वह पत्थर हो गया।

दक्षिण ध्रुव के प्रथम "निशाचर"—२

साधारणतया जब नई गृहस्थी बसाई जाती है, तो कितनी ही चीज़ों की जरूरत होती है। फिर यह तो दक्षिण ध्रुव की गृहस्थी थी। अगर सूई की भी जरूरत होती तो छः महीने प्रतीक्षा करनी होती। रेडियो के द्वारा बातचीत तो की जा सकती थी पर मनुष्यों के संसार से कुछ मँगाया न जा सकता था।

किन्तु इस शिविर में रखी चीज़ों से ही जरूरतों के मुताबिक बहुत-सी चीज़ें बना ली गईं। बर्फ की सुरंग में रोशनी करने के लिए तार काफी न थी। उन्होंने इस काम के लिए उस तार का उपयोग किया जिसका वायुयानों से समान उतारने के लिए उपयोग हुआ था।

दक्षिण ध्रुव में, जितने भी अनुसन्धान केन्द्र थे उनमें और विशेषज्ञों की अपेक्षा ऋतु विशेषज्ञ अधिक थे। दक्षिण ध्रुव के शिविर में ये चार थे।

उन्होंने शिविर से सौ गज़ दूर, बाहर कई उपकरण रखे, और उनसे जलवायु के बारे में जो कुछ जानकारी मिलती, उसका पूरा विवरण रखते। ये उपकरण बहुत ही नाजुक थे। उनको तीन तीन घंटे में एक बार जाकर देखना होता था। इस काम के लिए चार में से एक को भारी पोषाक पहिन कर, टोर्च लाइट की रोशनी में, भीषण सरदी में बाहर जाना होता। जानेवाला अधिक देर बाहर नहीं रह सकता था। उपकरणों को
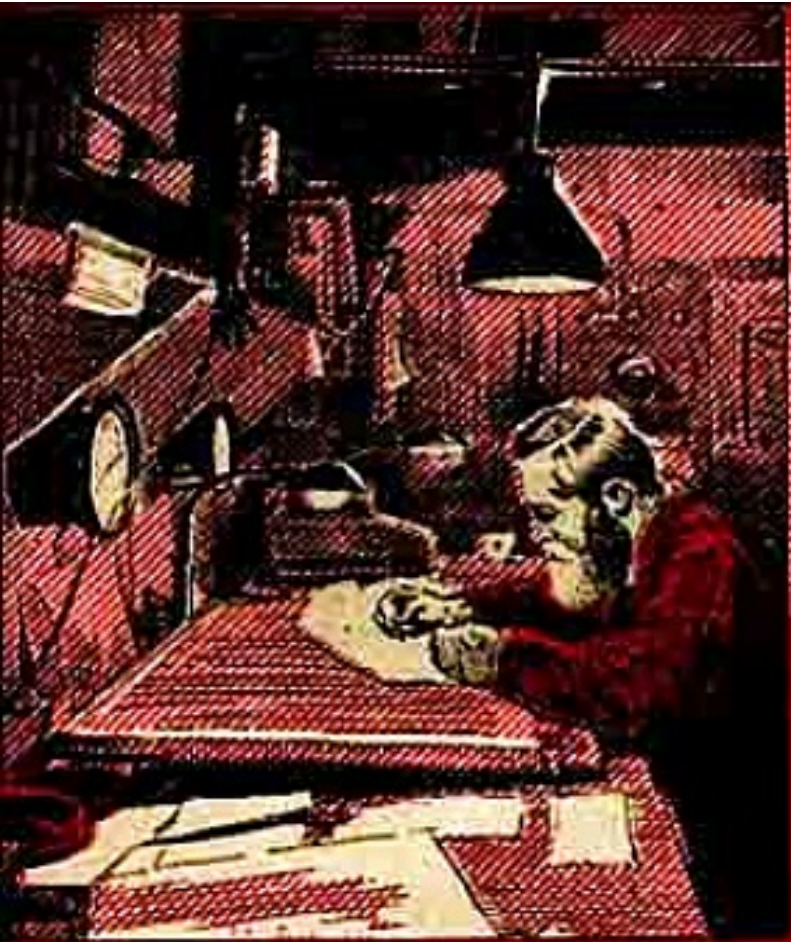
देखना, तापमान जानना, आकाश से बर्फ गिर रहा था कि नहीं, यह पता लगाना और वापिस चले जाना, यही उसका काम था।

इस तरह बाहर जानेवाले चन्द्रमा के होने के समय, चन्द्रमा के चारों ओर बने इन्द्रधनुष देख सकता था। यह इन्द्रधनुषों का घेरा वायु के अति सूक्ष्म बर्फ कणों के कारण बनता था। अगर कोई इस प्राकृतिक शोभा की ही विशेषता देखता रहे, तो वह सरदी के कारण बाहर ही अकड़ जाये।

जलवायु विशेषज्ञों को ऊपर की हवा की भी परीक्षा करनी होती। इसके लिए रेड़ियो यन्त्रों को रखकर बड़े बड़े बेलून ऊपर भेजे गये। बेलूनों के अधिक ऊँचा जाने के लिए यह आवश्यक है कि वे हल्की हाइड्रोजन से भरे जायें। हाइड्रोजन की उत्पत्ति के लिए भी उनके पास यन्त्र था। वह कितने ही अल्यूमिनियम के टुकड़े, कोस्टिक सोड़ा और जाने कितना ही जल निगल जाता था।

हवा में उड़नेवाले बेलूनों का पता लगाने के लिए भोजनशाला के पास एक कमरा बनाया गया और उसको प्लास्टिक से ढक दिया गया। इस कमरे में वह यन्त्र था, जो रेड़ियो संकेतों को ग्रहण करता था। बेलूनों में रखे रेड़ियो यन्त्र, तापमान, वायु के दबाव, आदि के बारे में जानकारी संकेतों के रूप में पहुँचाते। जब वे संकेत न सुनाई देते तब उनके विवरण लिखे जाते। फिर उनको, छोटे अमेरिका के वातावरण केन्द्र को, रेडियो के द्वारा भेजा जाता।

इस शिविर में भूचाल के बारे में भी अध्ययन किया गया। यह अध्ययन

करनेवाला, थोब बेन्सन था। इसके लिए उसने बहुत सूक्ष्म यन्त्रों का उपयोग किया। शिविर के पास का भूकम्पन और शिविर के कम्पन का रिकार्ड करने के लिए १००० फीट की दूरी पर यन्त्र रखा गया। शिविर से वहाँ तक एक सुरंग खोदी गई।

दीर्घ रात्रि में ध्रुव का प्रकाश दिखाई ही देता रहा। इन्हें "अरोरा" कहा जाता है। इनके फोटोग्राफ लिए गये। इनका अध्ययन किया गया। इस काम के लिए नियुक्त, अर्लो लाडोल्ड एक बहुत ऊँचे सन्दूक के समान जगह पर बैठकर काम किया करता। जब तक ध्रुव का प्रकाश, आकाश उज्ज्वल रहता, वहाँ ऊँची जगह से उतरकर न आता। प्रायः वह दो तीन घंटे ही सोता।

अगर अर्लो शिविर के ऊपर रहकर काम किया करता था, तो एडवर्ड रेगिगोन शिविर के नीचे काम किया करता था। वह हिमशास्त्र विशेषज्ञ था। बर्फीले पत्थरों को खोदना और उनको अपने कमरे में ले जाना और उनको आरे से काटकर उनकी परीक्षा करना उसका काम था। इनके अध्ययन से उस प्रान्त के पहिले के वातावरण के बारे में मालूम किया जा सकता था। वह एक एक अंगुल मोटे बर्फ की परतों की फोटो लेता। उनको पिघाल कर, पानी बनाकर, रसायनिक परीक्षा के लिए उनको अलग रखता। इसी प्रकार वायु के बहुत ऊपरवाले विद्युत मंडल के विषय में भी दिन रात अध्ययन किया गया।

वह समय भी समीप आया जब कि यह दीर्घ रात्रि, जिसको वस्तुतः काल रात्रि कहना चाहिये, खतम होने वाला था और छः महीने के बाद फिर सूर्योदय होनेवाला था।

दक्षिण ध्रुव की दीर्घ रात्रि यद्यपि छः महीनों की होती है तो भी गाढ़ा अन्धकार चार महीने ही रहता है। सूर्यास्त के बाद एक मास तक सूर्योदय से पहिले एक महीने आकाश में सन्ध्या का प्रकाश रहता है ठीक उसी तरह जिस तरह हम सूर्योदय के पूर्व और सूर्यास्त के बाद प्रकाश देखते हैं। पर जलवायु में अधिक फर्क नहीं पड़ता।

यहाँ रात बितानेवाले "निशाचरों" के लिए जून १२ मध्य रात्रि थी। बाहर सरदी बर्फ से, ८० डिग्री अधिक थी। इसके अलावा जोर से हवा चल्ती। पन्द्रह बीस मील घंटे की रफ्तार से। तो भी इस केन्द्र में रहनेवाले, उस ठंड और हवा में भी बाहर जाया करते। नित्यकृत्य नियमानुसार चलते रहते। उनमें से एक बार एक बाहर गया। और चार घंटे बाद भी वापिस न आया। परन्तु उसे कोई बीमारी न हुई।

सितम्बर १८ को, डाक्टर सिपिल, बर्फ की सुरंग से बाहर आया। सूर्योदय के लक्षण दीख पड़ते थे। सारा आकाश ऐसा लगता था जैसे उस पर हल्दी पोत दी गई हो। पीला पीला था। डा सिपिल के साथ जानरक नाम का एक सैनिक अधिकारी था। "ब्रेवो" नाम का कुत्ता भी था। और कोई न था।

कई महीनों बाद, फिर दिन का प्रकाश दिखाई दिया था इसलिए कुत्ता खुशी में उछल कूद रहा था। पर उस दिन सरदी, बर्फ से १०२ डिग्री अधिक थी। दुनिया में कहीं भी इतनी ठंड नहीं होती। वे दक्षिण ध्रुव में गाड़े गये झंडे की ओर जा रहे थे। मोटे मोटे कपड़ों में भी ठिठुर रहे थे।
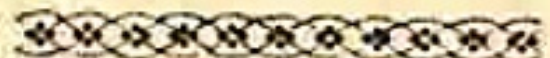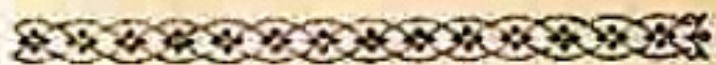
इस ध्रुव के बारे में जब ठीक ठीक हिसाब लगाया गया तो वह शिविर से, २५०० फ़ीट दूर आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट की ओर पाया गया। इस बार उन्होंने दक्षिण ध्रुव का ठीक पता लगाकर, वहाँ झंडा गाड़ा। फिर भी उन्हें सन्देह था कि सम्भव है कि उनके हिसाब में कोई गल्ती रह गई हो। इसलिए उन्होंने झंडे के चारों ओर सौ फ़ीट का घेरा बनाया। और वहाँ खाली तेल के डब्बे रख दिये। यानी ध्रुव उन खाली डब्बों के बीच में कहीं था। उन डब्बों की परिक्रमा के लिए दो मिनट ही लगते थे, पर ऐसा लगता था जैसे पृथ्वी की ही प्रदक्षिणा करली हो। कड़ी सरदी और तेज हवा के कारण चलना बहुत मुश्किल था।

जब वे अरुणोदय की ओर देख रहे थे तो उनको एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। अब उस प्रान्त के आकाश में बहुत प्रकाश था। उसके चारों ओर पतले, लम्बे बादल थे। इनमें से प्रकाश इस तरह निकल रहा था, मानों कोई फुलझड़ी-सी जल रही हो। आँखें चौंधिया गईं। वह लाल, हरा, और नीला प्रकाश था। एक सेकेन्ड इस तरह की कान्ति होती और फिर लुप्त हो जाती। यह दक्षिण ध्रुव की विशेष घटना था।

उन्होंने शिविर में वापिस जाकर सब से कहा कि सूर्योदय होनेवाला था। सब केमरा लेकर बाहर आये। अब एक और बात हो रही थी। सूर्य ऊपर आता दिखाई दिया। परन्तु जब आँखें साफ़ करके देखा तो वह सूर्य की तरह न था। वह लाल लकीरों की तरह था। एक घंटे बाद कोहरा-सा आया, फिर कुछ भी न दिखाई दिया। वे निश्चित न कर पाते थे कि क्या हो रहा था।

पर उन्होंने सूर्योदय न देखा था, देखी थी एक प्रकार का मृग मरीचिका। भूमि से, १५०० फीट ऊँचे की वायु गरम होती है, और नीचे के सूर्य को तरह तरह से प्रतिबिम्बित करती है। ये मृग मरीचिकायें बहुत दिनों तक दिखाई दीं। वास्तविक सूर्य को क्षितिज से ऊपर आना चाहिये था। पर वह सूर्य एक तरफ उदित होता और दूसरी तरफ अस्त हो जाता।

वास्तविक सूर्योदय सितम्बर २३ को हुआ। वह सूर्य फिर मार्च २२ तक अस्त न होगा। तब तक दक्षिण ध्रुव में दिन रहेगा और उत्तर ध्रुव में रात्रि। सूर्योदय के उपलक्ष्य में शिविर में दावत की गई। खुशियाँ मनाई गईं।

सब में उत्साह ही न था, उत्कंठा भी थी। फिर वायुयान आयेंगे। पत्र आयेंगे। खाने की चीज़े आयेंगी। जरूरी चीज़ें आयेंगी। पर पहिले वायुयान को दक्षिण ध्रुव में पहुँचने के लिए सूर्योदय के होने के बाद पूरा एक महीना लगा।

१७ ओक्टोबर को वायुयान आया। हवा में शिबिर के चारों ओर घूमता रहा। पेराशूट की मदद से तेल के डब्बे फेंके गये, फिर डाक के थैले। आठ महीनों बाद शिबिरवालों ने बन्धु-मित्रों के पत्र पढ़े। इन आठ महिनों में रूसियों ने स्पुतनिक छोड़ा था। अडमिरल बर्ड मर गया था—दुखद वार्ता।

जैसे जैसे दिन गुज़रते गये वैसे वैसे वायुयानों का आना भी अधिक हो गया। पुराने लोगों की जगह नये लोग काम करने आये। १९५७ दिसम्बर १ को, डा. पाल सिपिल दक्षिण ध्रुव आया था। वह १९५८ दिसम्बर १ को, दक्षिण ध्रुव छोड़कर अमेरिका के लिए रवाना हो गया। उसने और उसके सहयोगियों ने जो परीक्षण शुरु किये थे, वे अब नये आदमी करने लगे।

अहिंसा ज्योति

[१]

अंग और मगध देशों में पाँच करोड़पति व्यापारी रहा करते थे। उनमें मेद एक था। उसकी एक लड़की थी, जिसका नाम चन्द्रपद्मा था और उसके एक लड़का भी था, जिसका नाम धनंजय था। धनंजय की सुमना नाम की पत्नी थी। उनकी एक लड़की थी, उसका नाम विशाख था। उसकी आयु सात वर्ष की थी।

खबर मिली कि बुद्ध अंग देश के भद्री नाम के ग्राम में आ रहे थे। मेद ने अपने लड़के धनंजय से कहा—"अपनी विशाख को बुद्ध के पास भेजो। देख आयेगी।" विशाख बुद्ध के पास जाने के लिए उतावला हो गई। उसके साथ उसकी उम्र की लड़कियाँ भी रथ में भेजी गईं। वे जब बुद्ध के पास पहुँचीं तो उनके समीप पैदल गईं।

बुद्ध ने उस लड़की को देखते ही सोचा—"यह मेरी प्रधान शिष्या होगी और मेरे अन्य शिष्यों के लिए मातृ सदृश।"

उन्होंने विशाख और उसके साथ आये हुए पाँच सौ लड़कियों को उपदेश दिया और उनको सन्मार्ग दिखाया। अगले

दिन विशाख का बाबा, मेद भी बुद्ध के दर्शन करने आया। बुद्ध ने उसका दो सप्ताह तक आतिथ्य स्वीकार किया। फिर वे जेतवन चले गये।

सात आठ वर्ष बीत गये। राजगृह के राजा, बिम्बसार और कोशल के राजा आपस में बहिनोई थे, दोनों ने एक दूसरे की बहिन से शादी की थी। राजगृह में बड़े बड़े व्यापारी थे। परन्तु कोशल में न थे। इसलिए कोशल के राजा ने बिम्बसार के पास जाकर कहा—"आप अपने नगर के एक व्यापारी को हमारे यहाँ भेजिये।" बिम्बसार ने धनंजर को बुलाकर कहा—"क्या तुम कोशल जाकर वहाँ रह सकोगे!

"अगर आपकी आज्ञा हुई तो जाऊँगा ही।" धनंजर ने कहा।

वह कोशल देश के राजा के साथ मय परिवार के निकल पड़ा। रास्ते में, शाम होते होते वे एक बड़े खाली मैदान के पास पहुँचे। वहाँ एक चौरास्ता था। धनंजर ने कोशल राजा से कहा—"महाराज, मेरे साथ बहुत से आदमी हैं। इन सब के लिए, हो सकता है, आपके

शहर में जगह न हो। अगर आपकी अनुमति हो, तो हम यहीं एक नगर बना लेंगे।"

कोशल देश का राजा इसके लिए मान गया। वहाँ साकेत नगर बनाया गया। राजा ने धनंजर को उस नगर का नायक बनाया।

उस समय श्रावस्ती नगर में, मिगार नाम के व्यापारी का एक लड़का था, जिसका नाम पूर्ण वर्धन था। वह बहुत सुन्दर था। माँ बाप ने उससे शादी करने के लिए कहा। उसने कहा—"अगर मैंने विवाह किया, तो पंच कल्याणी कहलाई जानेवाली स्त्री से ही विवाह करूँगा।" पंचकल्याणी की वेणी मयूर के पूँछ के समान होनी चाहिये, और होठ, चाहे पान खाये या न खाये एक ही रंग में होने चाहिये। दान्त सफ़ेद होने चाहिये। बड़े छोटे नहीं। टेढ़े मेढ़े नहीं। शरीर का रंग सब जगह एक जैसा होना चाहिये। कहीं दाग नहीं होने चाहिये। चाहे कितने भी बच्चे हों, पर यौवन बना रहना चाहिये। भले ही उम्र हो जाये, पर बाल नहीं पकने चाहिये। माँ बाप, पूर्ण वर्धन की बात की

उपेक्षा न कर सके। उन्होंने ऐसी कन्या ढूँढने के लिए आठ ब्राह्मणों को जगह जगह भेजा। वे कई देशों में घूम घामकर, एक त्यौहार के दिन साकेत आये। त्यौहार था, इसलिए नगर की उत्तम स्त्रियों को गलियों में देखने का अवकाश मिला। वे ब्राह्मण एक जगह खड़े हो गये और गलियों में आने जानेवाली स्त्रियों को गौर से देखने लगे।

थोड़ी देर में पन्द्रह वर्ष की विशाख, अपनी सहेलियों के साथ वहाँ आई। थोड़ी-सी बारिश हुई। विशाख की सहेलियाँ दौड़कर छत के नीचे खड़ी हो गईं। परन्तु विशाख धीमे धीमे छत की ओर आई, जैसे बारिश हो ही न रही हो।

"इनके दान्त कैसे हैं यह तो नहीं मालूम हो रहा है। किन्तु केश कल्याण, आदि चार कल्याण इस लड़की में हैं।" ब्राह्मणों ने सोचा, उसके दान्त देखने के लिए जरूरी था कि उससे बातचीत की जाये। इसलिए ब्राह्मणों ने उससे कहा—"न मालूम कौन अभागा तुम से शादी करेगा। सबेरे जो पानी लेने जाओगी, शाम के अन्धेरे होने तक वापिस न आओगी, और इस बीच तुम्हारा पति उपवास करेगा।"

"आप यह कैसे कह रहे हैं!" विशाख ने ब्राह्मणों से पूछा।

"आँखों से देखने से क्या नहीं पता चल रहा है? बारिश के होते ही और लड़कियाँ छत के नीचे भागी भागी आईं। और तुम बहुत देर तक नहीं आई।" ब्राह्मणों ने कहा।

"आप शायद सोच रहे हैं कि आलस्य के कारण मैं नहीं भाग सकी थी। परन्तु बड़ों ने कुछ के लिए भागना निषिद्ध कर रखा है। मुकुट और राजवेश पहिने राजा

को भागना नहीं चाहिए। अम्मारीवाले हाथी को नहीं भागना चाहिए। सन्यासी को नहीं भागना चाहिए। स्त्री को नहीं भागना चाहिए और अविवाहित स्त्री तो बिकाऊ माल की तरह है। अगर भाग दौड़कर कहीं उसने हाथ-पैर तोड़ लिया तो उसका मूल्य कम हो जाता है।"

विशाख की बातें सुनकर ब्राह्मण सन्तुष्ट हुए। उन्होंने सोचा कि वह पूर्णवर्धन के उपयुक्त पत्नी होगी। उन्होंने उससे कहा भी कि वे किस काम पर आये थे। उन्होंने उसको एक कीमती हार दिया। विशाख सब सुनकर उन ब्राह्मणों को अपने पिता के पास ले गई। धनंजर ने ब्राह्मणों से बर के वंश, गोत्र आदि के बारे में पूछा। "उनकी कितनी सम्पति है?" फिर यह प्रश्न किया।

"उसके हिस्से में चालीस करोड़ मुहरें आती हैं।" ब्राह्मणों ने कहा।

"वह तो मेरी लड़की के शिरस्नान के लिए भी काफी नहीं हैं। परन्तु वंश, गोत्र आदि में, क्योंकि वह हमसे कम नहीं हैं, इसलिए मैं उसको अपनी लड़की देने के लिए तैयार हूँ।" धनंजर ने कहा।
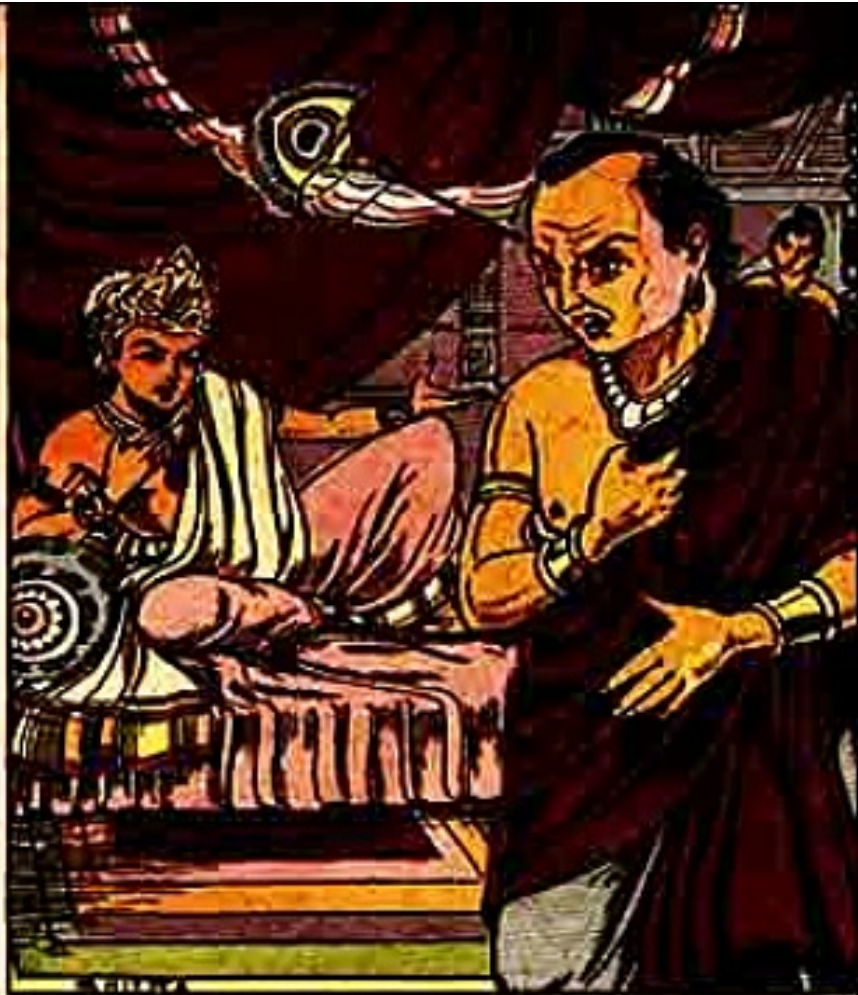
ब्राह्मणों ने वापिस जाकर मिगार को यह सब सुनाया। मिगार सन्तुष्ट हो साकेत नगर गया। अपने लड़के का विवाह निश्चित करके, यह शुभ-समाचार राजा को बताने के लिए वह उनके दर्शनार्थ गया।

राजा ने सब सुनकर कहा—"ठीक है! धनंजर भी हमारा विश्वास-पात्र है। मैंने ही उसको यहाँ बुलाया है। इसलिए विवाह में मैं भी सपरिवार उपस्थित होऊँगा।"

मिगार को चिन्ता सताने लगी। अगर राजा अपने परिवार, नौकर, चाकरों के साथ आये, तो धनंजर, उनके लायक
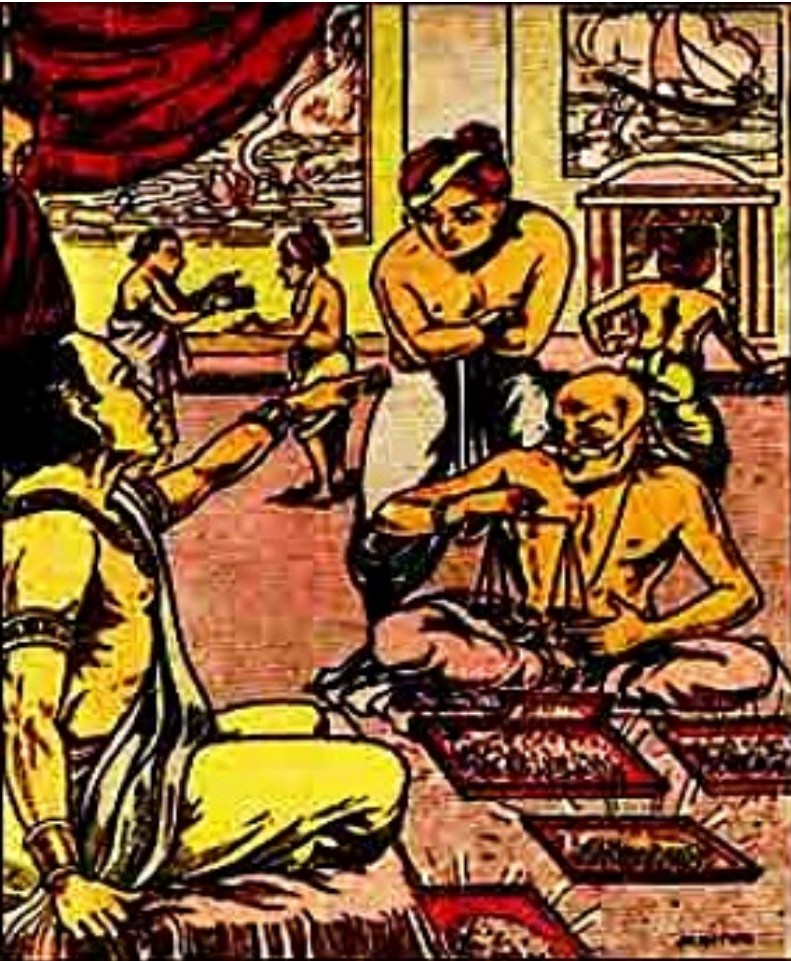
भोजन-पान, रहने आदि की व्यवस्था कर सकेगा कि नहीं। उसने धनंजर को यह सब कुछ बताते हुए कहा—"अगर यह विवाह बिना किसी वैभव के कर दिया गया तो आपका बहुत-सा खर्च बचेगा, ऐसा मेरा ख्याल है।"

"अगर दस राजा भी अपने परिवार और नौकर चाकरों के साथ आयें तब भी मैं डरनेवाला नहीं हूँ।" धनंजर ने जवाब दिया। परन्तु मिगार को यह सब दिखावा-सा लगा। यह धनंजर इधर-उधर के दिखावे में पड़कर अपने लिए गढ़ा खोद रहा है।

बरात साकेत नगर गई। राजा असंख्य आदमियों को लेकर पहुँचा। धनंजर ने सब के रहने की व्यवस्था की। उनके भोजन के लिए प्रबन्ध किया। उन्होंने सुनारों को बुलाकर ढेर-से हीरे-मोती दिये। सोने-चान्दी वगैरह भी। "जल्दी मेरी लड़की के लिए आभूषण बनाकर लाओ।" उसने उनको आज्ञा दी।

दिन गुजरते गये। बराती मजे में आराम से खा-पी रहे थे। कब विवाह होना था, किसी को न मालूम था। राजा ने धनंजर को बुलाकर पूछा—"हमारा खर्च कब तक उठाओगे? जल्दी मुहूर्त निश्चित करके विवाह करके हमें भेज क्यों नहीं देते?"

"महाराज! शुभ-मुहूर्त अभी चार महीनों तक नहीं आयेगा। आप मेरे लिए बिल्कुल भार नहीं हैं। विवाह होने तक आप सब मेरा आतिथ्य स्वीकार कीजिये। यही मेरी प्रार्थना है।" उसने कहा।

चारों महीनों, ऐसा लगता था, जैसे हर घर में विवाह हो रहा हो। अतिथियों को किसी बात की कमी न थी। वर्षा शुरू हो गई थी। इसलिए ईन्धन की कमी थी। रोज पाँच-सौ गाड़ी ईन्धन की जरूरत थी।
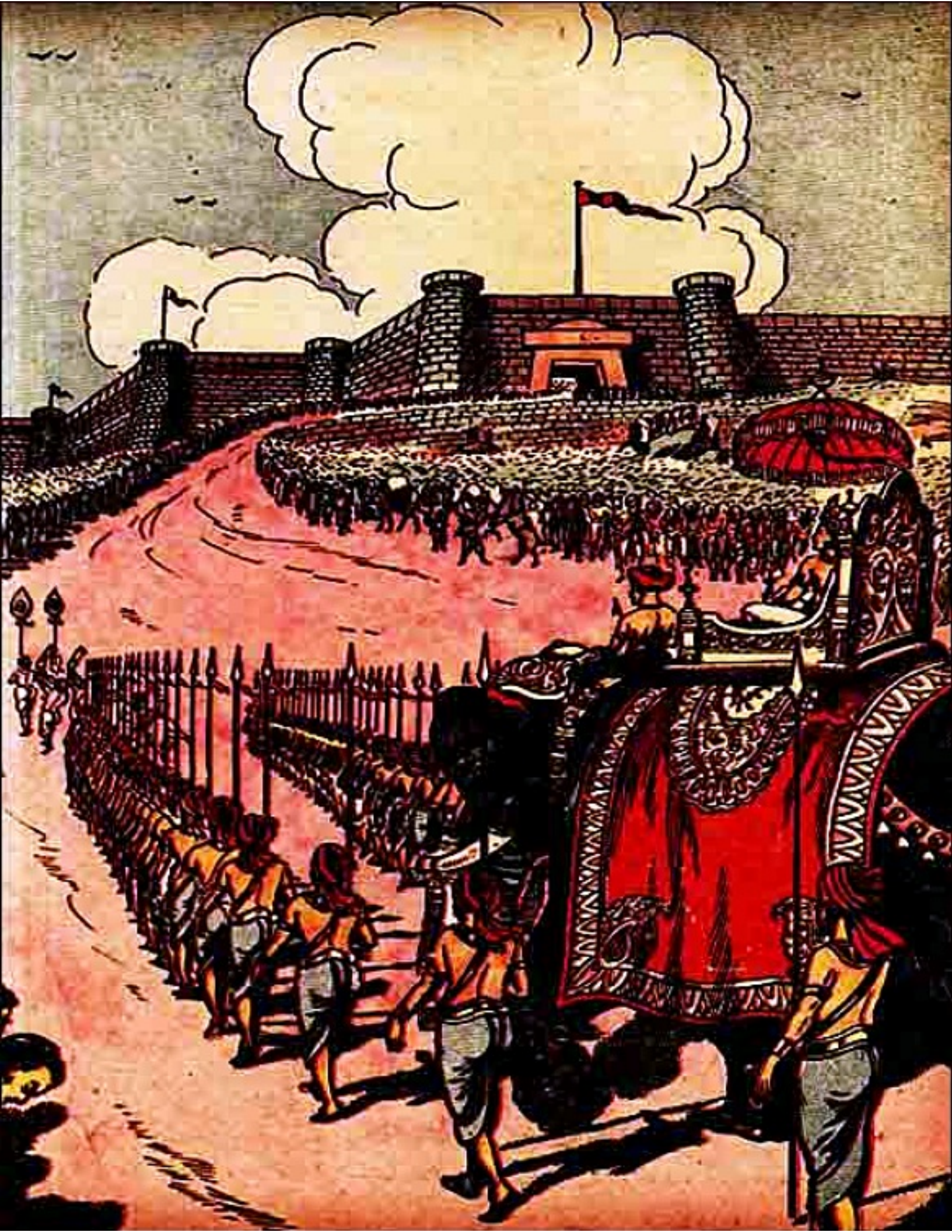
सेवकों ने धनंजर से आकर कहा—"ईन्धन मिलना बहुत मुश्किल हो रहा है।" उसने आज्ञा दी "अस्तबल और हस्तिशालाओं को तोड़ दो और उनकी लकड़ी को ईन्धन बनाकर जलाओ!"

चार महीने गुजर गये। सुनार, आभूषण बनाकर ले आये। विवाह के दिन वधु को आभूषण पहिनाये गये। उसके शरीर पर सात करोड़ मुहरों के आभूषण थे। (कहा जाता है, उस समय में, इतने आभूषण दो ही स्त्रियों के पास थे। उनमें से एक सुजाता थी। सिद्धार्थ के बुद्ध होने के पहिले, वह उन आभूषणों को पहिनकर उनको खीर देने गई थी। दूसरी बन्धुल क्षत्रिय की पत्नी थी। इस बन्धुल के बारे में हम आगे आगे जान सकेंगे।)

विवाह समाप्त हुआ। धनंजर ने गाड़ियाँ भरकर सोना, चान्दी, गृहस्थी के उपकरण आदि लड़की को दिये। उसकी रक्षा के लिए आठ बुद्धिमानों को दिया। हजारों दास-दासियाँ दीं। एक लाख बीस हजार गौवें दीं। वह राजा और बरातियों को आगे रास्ते तक पहुँचा कर वापिस चला आया।

मिगार को लगा जैसे सफेद हाथी खरीद लाया हो। "बहू के साथ इतने सारे लोग क्यों? इन सब का खर्च मैं कैसे उठाऊँ!" उसने सोचा।

वधू जब गृह प्रवेश कर रही थी तो राजा व अन्य सामन्तों ने विशाख को अमूल्य उपहार दिये। विशाख को न सूझा कि उनका क्या करे। उसने एक की दी हुई चीज़ दूसरे को भेंट में दे दी।

(अभी है)

वनमानुष

पूंछवाले बन्दरों के बारे में हमने पिछले महीने बताया था। अब बिना पूँछ के बन्दरों के विषय में बतायेंगे।

साधारण बन्दरों की अपेक्षा बिना पूँछ के बन्दर मनुष्य के अधिक समान होते हैं। शक्ल-सूरत में, शरीर के ढांचे में, यहाँ तक स्वभाव में भी, बिना पूँछ के बन्दर आदमी से बहुत मिलते जुलते हैं।

प्रायः ये खड़े होकर दो पैरों पर चलते हैं। रहने के लिए एक प्रकार का घर भी बना लेते हैं। मनुष्य के समान उनकी हाथ की अंगुलियाँ पैरों की अंगुलियाँ, दान्त वगैरह भी होते हैं। इनका दिमाग ही कुछ छोटा होता है। बस, मनुष्यों की तरह कोई पोषाक नहीं पहनते।

मनुष्यों में सब से कम बुद्धिवाले कंकाल, पेरू में दिखाई दिया। इस में ९१० घन सेन्टीमीटर बुद्धि थी। आज के मनुष्य की बुद्धि १३००, से १९०० सेन्टिमीटर होती है। इसकी तुलना में गुरिल्ला की ६०० ही है।

कुछ ऐसी बीमारियाँ—"जैसे एमेन्ड साइटेस इन वनमानुषों को भी होती है। सोते समय ये भी कभी कभी खुर्राटे लगाते हैं।

वनमानुष और मनुष्यों में एक और समानता है। वह यह कि उनके भी नौ महीने बाद बच्चे होते हैं। जन्म के समय वनमानुषों का भार भी
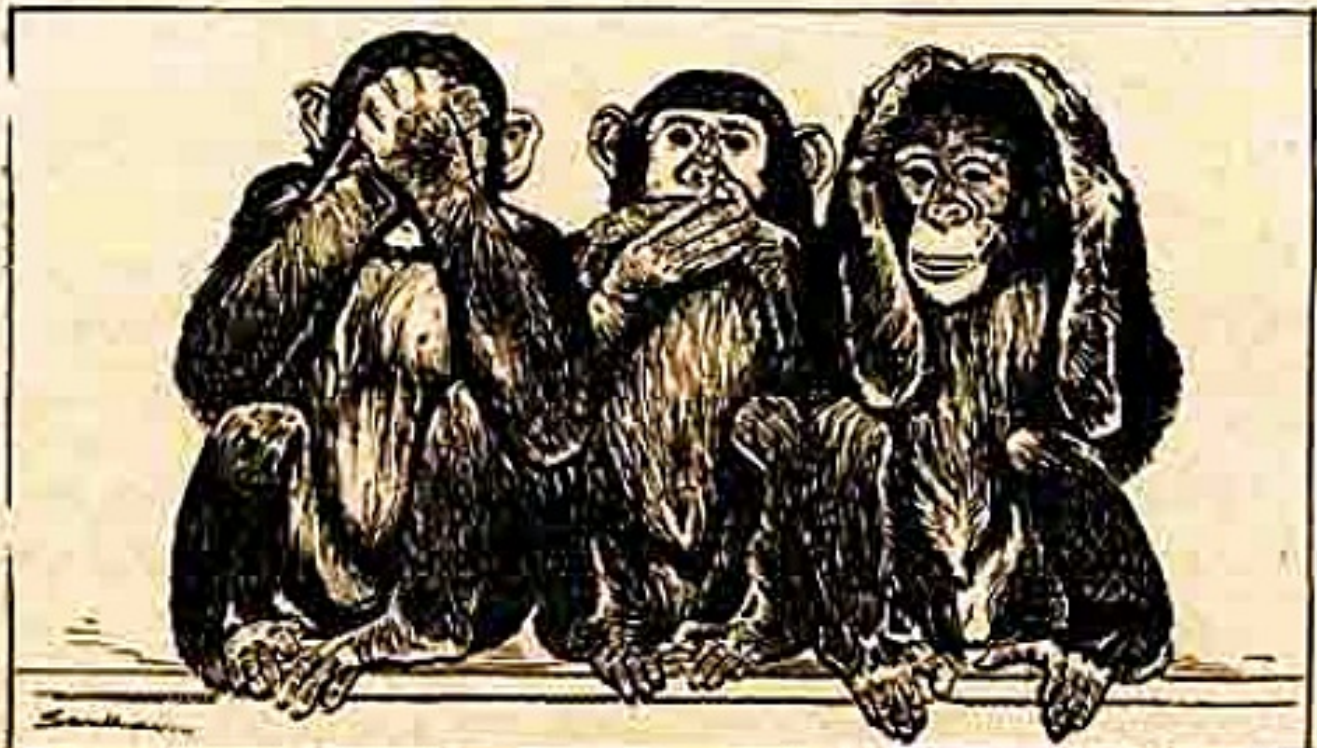
बुरा न देखेंगे, न कहेंगे, न सुनेंगे—चिपान्जी।
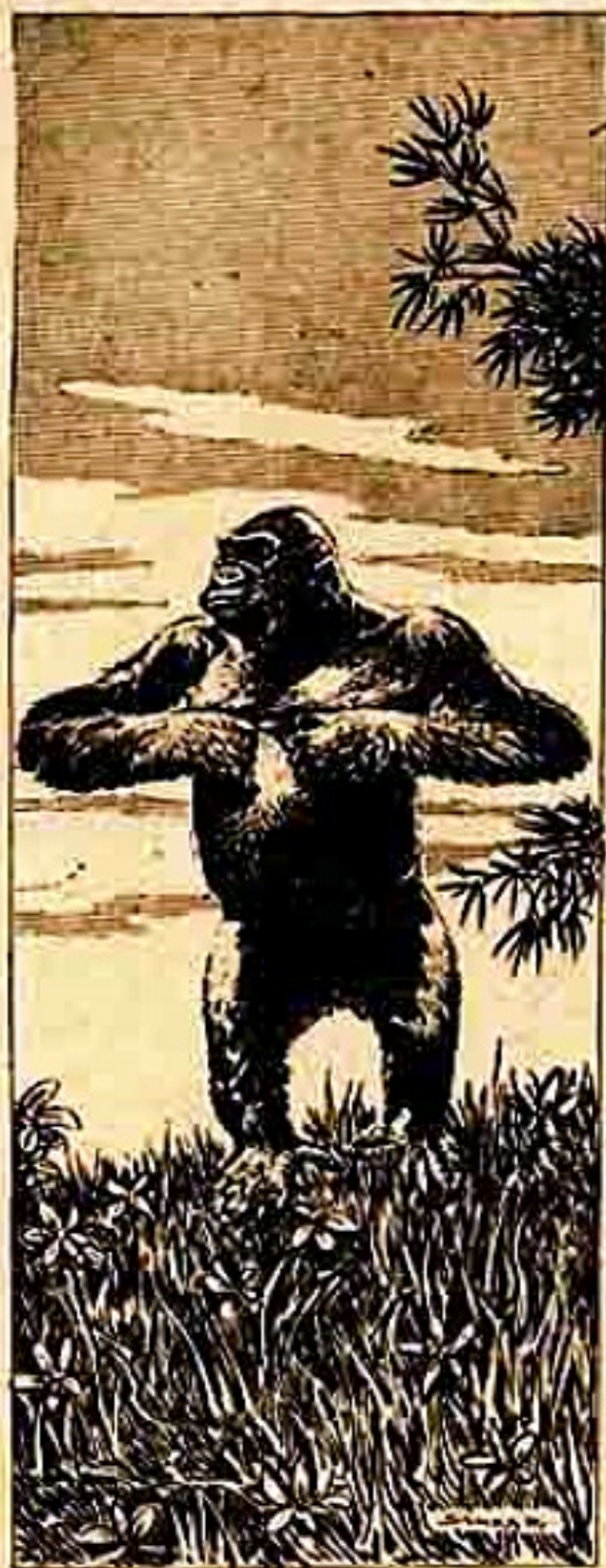
छाती पीटने वाला गोरिल्ला ।

तीन पाउन्ड से सात पाऊन्ड तक होता है। "गिब्बन" नाम के वनमानुष माँ के गर्भ में सात महीने ही रहते हैं।

गोरिल्ला, चिंपान्जी, गिब्बन, उरान्गुटान बड़े बड़े वनमानुष हैं।

सब से अधिक भारी गोरिल्ला है। इनमें ६०० पाऊन्ड से भी अधिक भारी भी पाये गये हैं। इनके हाथ चिंपान्जियों के हाथों से भी लम्बे होते हैं। इनकी भौंहें आगे बढ़ी हुई होती हैं। इनकी छातियाँ बड़ी होती हैं और पेट भी विशाल। ये अपनी अंगुलियों को लपेटकर चारों पैरों के बल चलते हैं। पर जरूरत पड़ने पर वह औरों की तरह और शान से खड़ा हो सकता है। सन्तोष, कोप, उत्साह, आदि, अपनी आतिबलों को दिखाने के लिए ये खड़े होकर जोर जोर से छाती पीटते हैं। यही शायद इनकी भाषा है।

गोरिल्ला के कान चिंपान्जी के कानों से छोटे होते हैं। उसकी आँखें अन्दर धंसी हुई, और शान्त होती हैं।

वनमानुष पश्चिमार्ध गोल में नहीं हैं। इसलिए पाश्चात्य देशवासियों ने सौ वर्ष पहिले वनमानुष नहीं देखा था।

कहा जाता है, जब अफ्रिका वासियों ने पुराने ढंग की बन्दूकों से वनमानुषों को मारना चाहा तो उन्होंने बन्दूकों की नालियों को तोड़ मरोड़ कर रख दिया।

गोरिल्ला सचमुच बहुत बलवान होता है। इसलिए, जिन जंगलों में ये रहते हैं। वहां उनको किसी सहज शत्रु से खतरा नहीं होता।

मामूली हिंस्र जन्तु उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। जंगली भैंसे भी उनके पास नहीं आते। न गुरिल्ला ही उनके पास आते हैं। कभी कभी चीता वनमानुषों के बच्चों को उठा ले जाता है। पर वे बड़े वनमानुषों को नहीं छेड़ते। उनसे मुकाबला नहीं करते। जहाँ शेर रहते हैं, वहाँ गोरिल्ला नहीं रहते। इसलिए उनको उनसे भी भय नहीं है।

इतना बलशाली होने पर भी इतने बड़े बड़े दान्तों को होने पर भी गोरिल्ला मुख्यतः शाकाहारी है। हो सकता है यह कभी कभी पक्षियों के अंडे खाता हो। यहाँ यह भी कह दिया जाय कि विशाल हाथी भी शाकाहारी है।

हाल में, कुछ पाश्चात्य देशवासियों ने बेल्जियम कान्गो जाकर वहाँ गोरिल्ला के स्वाभाविक जीवन का अध्ययन किया। जंगलों में गोरिल्ला परिवार घूमते फिरते हैं। दुपहर की गरमी में, बड़े गोरिल्ला आराम करते हैं। और छोटे गोरिल्ला खेलते कूदते हैं।

रात के समय ज़मीन पर पत्ते बिछाकर बिछौना बना लेते हैं, और उन पर वे सोते हैं। केवल 'पिता' गोरिल्ला किसी पेड़ के सहारे पीठ लगा कर सोता है। कभी कभी मादा गोरिल्ला और उनके बच्चे पेड़ की टहनियों पर भी सोते हैं।

सवेरा होते ही, वे आहार की खोज में निकल पड़ते हैं। वे पौधे उखाड़कर उनकी जड़ों को काटते हैं। कुछ जंगली पत्ते, कोपल, जामुन वगैरह उनको बहुत पसन्द होती हैं। वे क्योंकि बहुत मात्रा में खाते हैं। इसलिए

बलवान गोरिल्ला।

वे एक जगह नहीं टिक सकते हैं। वे घूमते रहते हैं। क्योंकि एक जगह का खाना उनके लिए बहुत दिन तक नहीं आता।

पाश्चात्य देश के लोग पहिले गोरिल्लाओं को पकड़ कर पाल न सके परन्तु वे अब कुछ चिड़िया खानों और सरकसों में भी देखे जाते हैं। कई, कई घरों में भी पल रहे हैं। सानडियागो के चिड़िया खाना में ६०२ पाउन्डवाला नर गोरिल्ला है। वर्नामत, बेली सर्कसवालों के पास ५०० पाऊन्डवाला 'गुगन्टिग' नाम का गोरिल्ला (संसार का सबसे भयंकर सजीव पशु) था। इतना "भयंकर" जन्तु भी एक छोटे से साँप को देखकर काँप उठता था। जब कभी वह पिंजड़े में न जाता, अकड़ता, उसे छोटा-सा साँप दिखाया जाता और वह तुरत पिंजड़े में चला जाता। पीछे मुड़कर भी न देखता।

बन्धित गोरिल्लाओं को वह सब चीज़ें दी जाती हैं, जो बच्चों को दी जाती हैं। यानी, मछली का तेल, दूध, फल, नारन्गी का रस शाक सब्जियाँ, अंडे। कभी कभी माँस के छोटे छोटे टुकड़े, रोटी आदि। उनका बड़ी सावधानी से पोषण करना होता है।

गोरिल्लाओं के बाद चिपान्ज़ी का नम्बर है। गोरिल्ला यदि भयंकर हैं तो चिपान्ज़ियों को देख कर हँसी आती है। मुख्यतया बच्चे चिपान्ज़ी तो बहुत ही दिलचस्प होते हैं। हमेशा शरारत करते रहते हैं। ये बहुत समझदार भी होते हैं।

वनमानुषों में इसी को हम प्राय: चिड़ियाखाना आदि में देखते हैं। ये जंगलों में, गोरिल्लाओं

पेड़ पर चिपान्ज़ी परिवार।

और उरान्गुटान भी की अपेक्षा अधिक संख्या में इधर उधर घूमते पाये जाते हैं।

क्योंकि ये आसानी से मिल जाते हैं, और आसानी से बहुत कुछ सीख जाते हैं, इसलिये इनका सर्कस, कार्निवाल आदि में अधिक उपयोग किया जाता है। "टार्ज़न" फिल्मों में, हम जो बन्दर देखते हैं, वह चिपान्ज़ी ही हैं। हमारे देश के चल-चित्रों में जिस "जिप्सी" ने अभिनय किया था, वह भी चिपान्ज़ी था। ये बन्दर पाँच छ वर्षों बाद कई बार बात सुनते नहीं। इसलिए इनको बाहर दिखाया नहीं जाता।

चिपान्ज़ी के बच्चे जिस आसानी से मनुष्यों के काम सीखते हैं उतनी आसानी से कोई और जानवर नहीं सीखता। वे मेज़ पर बैठकर खाना, सुराई से दूध या पानी ग्लास में डालना, साइकल चलाना, गाड़ियों को धक्का देना... आदि कई काम जल्दी ही सीख सकते हैं। उछल कूदना, शोर मचाना, चीज़ों को इधर उधर फेंकना, ऊँटपटाङ्ग शरारत करना उन्हें बहुत भाता है।

अफ्रीका के भूमध्य रेखा के प्रान्त में चिपान्ज़ी अधिक पाये जाते हैं। गोरिल्लाओं की तरह ये भी जंगलों में सपरिवार रहते हैं। कभी पचीस, तीस चिपान्ज़ी बच्चे एक साथ घूमते हैं।

ये गोरिल्लाओं के बनिस्पत पेड़ों पर अधिक समय बिताते हैं। गोरिल्लाओं और चिपान्ज़ियों में ये मुख्य भेद हैं...ये गोरिल्लाओं से छोटे होते हैं; नर और मादा चिपान्ज़ियों के डीलडौल में

छोटे चिपान्ज़ी सरकस में काम कर सकते हैं।

उतना फ़र्क नहीं होता, जितना कि गोरिल्लाओं में होता है। भौंहें आगे नहीं बढ़ी होतीं। नाकों में फ़र्क होता है। ये गोरिल्लाओं से भी अच्छी तरह खड़े होकर चाल से चल सकते हैं। ये गोरिल्लाओं से अधिक चुस्त और चालाक होते हैं। इनके बड़े बड़े पेट नहीं होते।

चिपान्जी को पालनेवाले साधारणतया इनको मनुष्यों के नाम रखते हैं। बुढ़पन से ही उन्हें मेज़ों पर चाकू-छुरी से खाना खाना सिखाते हैं। उनको बच्चों की तरह पालते हैं।

उरन्गुटान भी, गोरिल्लाओं की तरह बहुत कम संख्या में है। ये बोर्नियो और सुमात्रा के जंगलों में पाये जाते हैं। कहीं ये लुप्त न हो जायें, इनके संरक्षणार्थ वहाँ की सरकार ने बहुत कुछ प्रतिबन्ध लगाये हैं।

"उरन्गुटान" का अर्थ मलाया की भाषा में "जंगली मनुष्य" है। परन्तु इन्हें बोर्नियो में "म्यू" या "माबा" कहते हैं।

उरन्गुटान भी और वनमानुषों की तरह कुटुम्बों में रहते हैं।

परन्तु वे प्रायः पेड़ों से नहीं उतरते। ज़मीन पर वे ठीक तरह घूम नहीं सकते। पेड़ों पर, इनके घर देखने से तो कौओं के घोंसले ही तुलना में अच्छे मालूम होते हैं। बहुत छोटे और गन्दे से होते हैं। उसमें ये बारिश में खूब भीगते हैं।

चिपान्जी के बच्चों की अपेक्षा उरन्गुटान के बच्चे कम शरारती होते हैं। ये पाले भी जा सकते हैं। सुमात्रा में कई उनको पकड़कर, कई तरह के काम सिखाते हैं।

उरंगुटान बन्दर, और बन्दरों से नहीं मिलते।

पहिले इनको पकड़ने के लिए मादा उरान्गुटान को मारा जाता था। जिन पेड़ों पर ये रहते थे, उनपर आग लगा दी जाती थी।

एक आदमी ने, बिना यह सब कुछ किये, एक बच्चे को पकड़ लिया। वह एक पेड़ पर था। उसने उस पेड़ के पास का पेड़ कटवा दिया। बच्चे को एक और पेड़ पर चढ़ने के लिए नीचे उतरना पड़ा। वह उतरा ही था कि उस समय उस पर जाल फेंककर उसे पकड़ लिया।

उरान्गुटान भी बलवान होते हैं। ये दूसरे बन्दरों के प्रति कभी भी किसी प्रकार का स्नेह नहीं दर्शाते.

यद्यपि उनकी बड़े वनमानुषों में गिनती होती हैं, तो भी गिबन बन्दर छोटे ही हैं। मछलियाँ जिस तरह पानी में उछल-कूद करती हैं, उस तरह गिबन भी पेड़ों पर खूब उछल-कूद करते हैं।

ये प्रायः पेड़ों से नहीं उतरते। अगर कभी उतरते भी हैं तो दूसरे पेड़ों पर चढ़ने के लिए। प्यास भी लगती है, तो पेड़ों के खोलों में जमा हुए वर्षा के पानी से उसे बुझा लेते हैं। पकड़े जाने पर भी उनकी यह आदत प्रायः नहीं जाती।

ये इतने ऊँचे पेड़ों पर रहते हैं, कि उनको देखकर आँखें चकरा जाती हैं। जब ये एक टहनी से दूसरी टहनी पर कूदते हैं, तो लगता है जैसे ये आकाश में तैर रहे हों। ये कभी कभी बीस बीस तीस तीस फीट गिरकर, नीचे की टहनी पकड़कर आगे बढ़ जाते हैं। भूमि पर गिरने लगते हैं कि ऊपर उठ जाते हैं।

गिब्बन की आवाज वायलेन की आवाज की तरह होती है।

ये जब पकड़े भी जाते हैं तो हमेशा खेल-खिलवाड़ करते रहते हैं। इनके हाथ इतने लम्बे होते हैं कि जब ये चलते हैं, तो हाथ भूमि को छूते रहते हैं। पेड़ों पर तो ये इतनी तेजी से चढ़ते हैं कि कहा नहीं जा सकता। यह भी सुना गया है, कि ये उड़ते पक्षी को भी पकड़ लेते हैं। यानी वे बिजली की तरह चुस्त होते हैं।

गिबन, फल, सब्जी के अतिरिक्त पक्षियों के अंडे भी खाते हैं। कई कीड़े मकोड़े भी खाते हैं।

गिबन के बच्चों को पालना आसान है। पर वे चार-पाँच वर्ष में मर जाते हैं। लेकिन ऐसे गिबन भी हैं, जो बहुत साल जीते हैं। इसकी स्वाभाविक आयु कितनी है कहना मुश्किल है। यद्यपि वे पेड़ों पर इतनी उछल-कूद, कारनामे करते हैं, पर लगता है, भूमि पर ये सब नहीं कर पाते। भूमि पर वे उतने चुस्त भी नहीं मालूम होते हैं जितने की पेड़ों पर।

गिब्बन बन्दरों में सब से अधिक बड़ा "सियमान्ग" है। "सियमान्ग" का मलय भाषा में "पिताजी" अर्थ होता है।

इसके दूसरी और तीसरी अंगुली के बीच में "जाल" सा होता है।

एक और बात। इनके गालों में एक थैली से होती है, जिसको ये हवा से भरकर, लम्बा और ऊँचा चीत्कार कर सकते हैं, जो दूर दूर तक सुना जा सकता है।

गिब्बन बन्दर कभी कभी चारों पैरों पर नहीं चलते। वे भी और वनमानुषों की तरह दो पैरों पर चलते हैं।

गिबन के गले में थैली-सी होती है। इसकी आवाज मीलों सुनाई देती है।

बापू की जन्मतिथि

[कुमारी ज्योति]

★

तारीख दूसरी अक्टूबर की
आती है हर साल,
इसी दिवस को जन्मा था वह
भारत माँ का लाल।

सदियों से थी पड़ी गुलामी
की पग में जंजीर,
रहा काटकर ही वह उसको
ऐसा था वह धीर।

दुबला-पतला लगता था, पर
दिल में था तूफ़ान,
उड़ा विदेशी शासन की ही
दी उसने चट्टान।

जिया सत्य के लिए सदा, था
मंत्र अहिंसा-प्रेम,
पाला मनसे, कर्म-वचन से
जीवन-भर यह नेम।

नहीं देश था भारत उसका
था सारा संसार,
मानवता का ही करने वह
आया था उद्धार।

'जियो और जीनेदो सबको'
इसका किया प्रचार,
मूर्तिमान वह दया-प्रेम था
था करुणा साकार।

वह था गांधी, युग की आंधी
था हम सबका बापू,
युग युग तक सब याद करेंगे
अमर रहेगा बापू।

उसके जैसे बेटे को पा
जननी हुई निहाल,
उसके ही कारण है ऊँचा
नव भारतका भाल!

चटपटी बातें

एक का शहर में अभी अभी तबादला हुआ था। उसने पड़ोस के आदमी से कहा—"जब से यहाँ आये हैं डाक्टर पर जाने कितना खर्च हो गया है। जब तक हम अपने यहाँ रहे, एक पैसा डाक्टर पर नहीं खर्चा।"

"हाँ, आपके गाँव के डाक्टर ने मुझे बता दिया है। वे आपके रिश्तेदार ही थे न!" पड़ोसी ने कहा।

* * *

एक राजा को एक बार यह जानने की सूझी कि लोग उसके बारे में क्या सोच रहे थे। वह वेष बदलकर एक गाँव के चौक में गया। वहाँ बहुत से किसान, और और लोग बैठे थे। राजा ने एक के पास जाकर पूछा—"तुम्हारे राजा के बारे में लोगों का क्या ख्याल है?

उस किसान ने इधर उधर देखा। उसने राजा को साथ आने का संकेत किया। राजा उसके पीछे गया। निर्जन प्रदेश में पहुँचने के बाद, किसान ने राजा के कान में कहा—"मुझ से पूछा जाय तो मैं कहूँगा कि राजा अच्छा ही है।"

* * *

मेनेजर : (मुनीम से) तुम बीमार हो, दफ्तर नहीं आ सकते हो, यह किसी ने टेलिफोन किया था।

मुनीम : पगला कहीं का। कल टेलिफोन करने के लिए कहा था, आज ही कर बैठा।

* * *

वह सभा, जिसमें रेलगाड़ियों के समय पर न आने के बारे में सोचा जाना था, रेलगाड़ियों के समय पर न आने पर, निश्चित दिन से अगले दिन स्थगित कर दी गई—एक समाचार।

रोगी : डाक्टर साहब मुझे हर आदमी दो आदमियों की तरह दिखाई देता है। क्या इलाज कर सकेंगे?

डाक्टर : क्या इसके लिए तीन के आने की जरूरत थी? (प्रेषक : श्री के. नागेश्वर राव, वाल्टेयर)
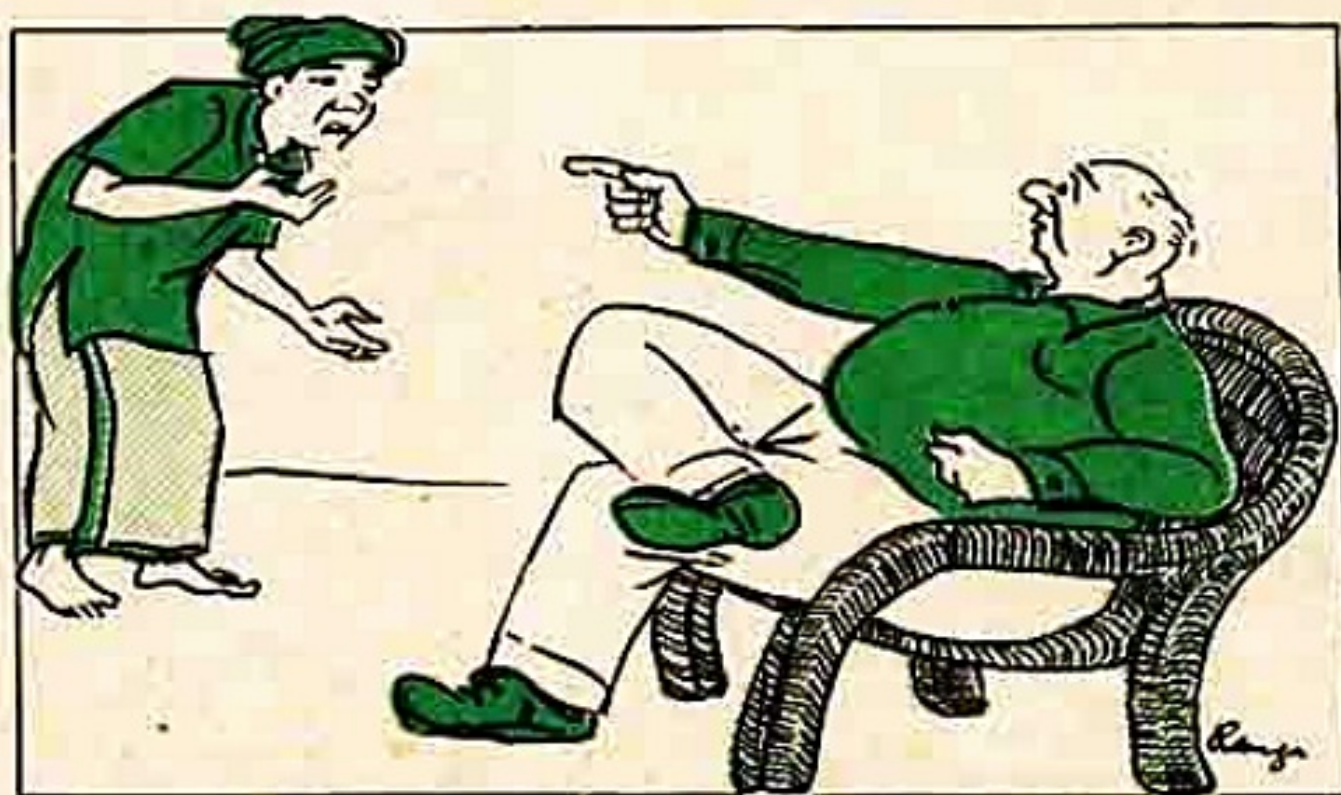
मालिक : कहा था न कि अगर कोई आये तो कह देना मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

नौकर : जी, मगर जो अब आये हैं, वे डाक्टर हैं। वे आपको जरूर देखना चाहते हैं।

हमारी रसायनशालायें :

५. सेन्ट्रल ग्लास एन्ड सिरामिक रिसर्च इन्स्टिट्यूट—कलकत्ता

हमारे देश में, देश के लिए आवश्यक शीशे की उत्पत्ति नहीं हो रही है। मुख्यत: चश्मों के शीशे, लेन्स वगैरह, ब्रिटेन, फ्रान्स, पश्चिम जर्मनी, अमेरिका से मंगाये जाते हैं। हर किसी उद्योग में अच्छे शीशे, चीनी मिट्टी की चीज़े अत्यन्त आवश्यक हैं।

इनकी उत्पत्ति के बारे में खोज करने के लिए कलकत्ता में सेन्ट्रल ग्लास एन्ड सिरामिक इन्स्टिट्यूट स्थापित की गई। अगस्त २६, १९५६ से यह काम भी करने लगी है। यहां हर तरह के शीशे को नियमित मात्रा में बनाने के लिए आधुनिक भट्टियाँ, व अन्य यन्त्र, और शीशे परखने के लिए आवश्यक उपकरण हैं।

इस संस्था के कार्य यों हैं।

तरह तरह के शीशे, और चीनी मिट्टी के उत्पत्ति के विषय में परिशोधन, उनका परीक्षण करके उनके अनुपात नियमित करना। कल करखानों को वैज्ञानिक सहायता करना, वैज्ञानिक ज्ञान का प्रसार। इस संस्थाने देश में उपलभ्य शीशे और चीनी के मिट्टी के उत्पादक द्रव्यों पर खोज की।

इस संस्था में प्रशिक्षित लोगों के सहयोग से दुर्गापुर में शीघ्र ही एक "आप्टिकल फेक्टरी" का निर्माण होने आ रहा है। सोवियत रूस की सहायता से इस फेक्टरी में प्रति वर्ष, २०० टन शीशा, जो ऐनकों वगैरह के लिए काम आयेगा, पैदा होगा।

लंका में था किसी समय में
असुरराज रावण बलवान,
भुजबल से उसने देवों का
चूर्ण किया था कर अभिमान।

सागर उससे सहमा रहता
नगराज काँपते थे थर-थर,
धरती उठती डोल कि सुनती
जब उसके रथ का घर्घर।

तीनों लोकों में उसकी ही
बजती थी तूती दिन-रात,
उसकी अनुमति बिना वृक्ष तक
हिला न पाते अपना पात।

धन-बल की प्रभुता के मद से
जब नष्ट हुआ उसका विवेक,
मनमानी फिर लगा प्रजा पर
करने तब वह असुर अनेक।

आखिर में मँडराया उसपर
अपना ही उसका जब काल,
सीता को ले भागा जबरन
बढ़ा राम का कोप कराल।

सेना लेकर राम-लखन ने
लंका पर की तुरत चढ़ाई,
कभी न देखी-सुनी जगत में
ऐसी थी वह विकट लड़ाई।

रावण मारा गया उसी में
राख बनी सोने की लंका,
राम लखन फिर लौटे घर को
बजा विजय का अपना डंका।

उसी समय से लोग मनाते
प्रति वर्ष यह विजया-त्यौहार,
विजय बुराई पर अच्छाई
की होती ही है हर बार!

[श्री 'राजीव']

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

दिसम्बर १९५९ :: पारितोषिक १०)
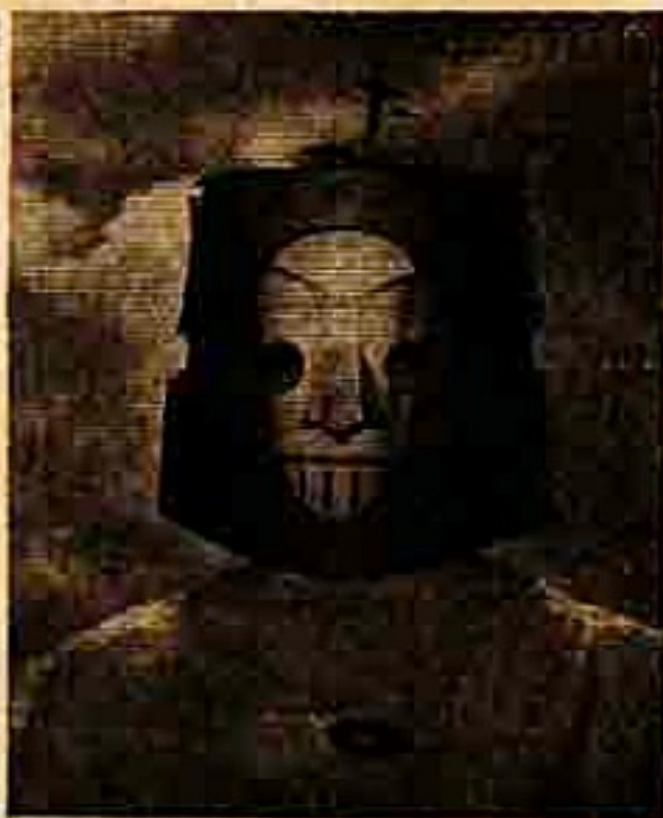
कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७, अक्टूबर '५९ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

अक्टूबर – प्रतियोगिता – फल

अक्टूबर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **कदम बढ़ाते चलो, जवान!**

दूसरा फ़ोटो : **उलटा सीधा एक समान!!**

प्रेषक : **श्री अजीत कुमार रॉय,**

c/o श्री एस. के. रॉय (D. S. P) न्यू पुलिस लाइन पो: पटना - १ (बिहार)

चित्र - कथा

एक दिन दास और वास एक बाग में गये। थैला भरकर उन्होंने फल तोड़े। उसे पेड़ के नीचे रख गेंद खेलने लगे। गेंद एक झाड़ी में जा पड़ी। एक लड़का टोकरी लेकर उधर आ रहा था। उसने कहा कि झाड़ी में साँप था, और अगर उसने झाड़ी में से गेंद निकाल दी तो उसे कुछ फल देने होंगे। दास और वास मान गये। उसने झाड़ी में हाथ रखा था कि "टायगर" ने उसको पकड़ लिया। वह लड़का डर गया। "बाप रे बाप, साँप" चिल्लाता भाग गया। दास और वास उसका टोकरा लेकर घर चले गये।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works,

आधुनिक यन्त्र
और कुशल
कार्य-कर्ताओं से
सुसज्जित,
सुव्यवस्थित
बृहत संस्था
PRASAD
PROCESS
आफसेट प्रिन्टर्स

आओ! आओ! बच्चो!

सनलाइट रंग भरने का मुकाबला

रू.२५००० के सैकड़ों शानदार इनाम!

दो पहले इनाम: रू.४००० में भारत की शानदार सैर या नकद!

चार दूसरे इनाम: एच.एम.वी. रेडिओग्राम!

छः तीसरे इनाम: मरफ़ी ऑल वेव रेडिओ और एक हिंद अम्बैसेडर बाइसिकल

२००० प्रोत्साहन के इनाम: पेंटिंग सेट या एक गुड़िया!

बच्चो, इस मनोरंजक मुकाबले में ज़रूर हिस्सा लो! यह है भी बहुत आसान! जीत गये तो मज़ा ही मज़ा है! सब से पहले अपने सनलाइट के दुकानदार से मुफ़्त दाखिला-फ़ार्म ले आइये। फ़ार्म पर एक सुंदर चित्र है। बस, उस में रंग भर दीजिये—रंग भरने की आप कोई भी सामग्री इस्तेमाल कर सकते हैं!

आयु के अनुसार यह मुकाबला दो हिस्सों में बांटा गया है: (१) १० वर्ष से कम और (२) १० और १५ वर्ष के बीच। दोनों हिस्सों के चित्र अलग अलग जांचे जायेंगे परन्तु दोनों हिस्सों में पहले, दूसरे, तीसरे और प्रोत्साहन के सभी इनाम, एक से दिये जायेंगे।

आखिरी तारीख: १६ नवम्बर १९५२

बच्चो! जल्दी करो!

आज ही अपने लिए दाखिला फ़ार्म ले आइये!

S.10-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने बनाया

Photo by P. V. Subramanyam

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

उलटा सीधा एक समान !!

प्रेषक :
अजीत कुमार राय - पटना

CHANDAMAMA (Hindi) OCTOBER 1959 Regd. No. M. 5452